وَمَا لِيَ لَآ اَعْبُدُ الَّذِيْ فَطَرَنِيْ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٢٢﴾ ءَاَتَّخِذُ مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً اِنْ يُّرِدْنِ الرَّحْمٰنُ بِضُرٍّ
لَّا تُغْنِ عَنِّيْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا وَّلَا يُنْقِذُوْنِ ﴿٢٣﴾ اِنِّيْٓ اِذًا لَّفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٤﴾ اِنِّيْٓ اٰمَنْتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمَعُوْنِ ﴿٢٥﴾
قِيْلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ ۭ قَالَ يٰلَيْتَ قَوْمِيْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٦﴾ بِمَا غَفَرَ لِيْ رَبِّيْ وَجَعَلَنِيْ مِنَ الْمُكْرَمِيْنَ ﴿٢٧﴾ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰى
قَوْمِهٖ مِنْۢ بَعْدِهٖ مِنْ جُنْدٍ مِّنَ السَّمَاۗءِ وَمَا كُنَّا مُنْزِلِيْنَ ﴿٢٨﴾ اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ خٰمِدُوْنَ ﴿٢٩﴾
يٰحَسْرَةً عَلَى الْعِبَادِ ۚ مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٣٠﴾ اَلَمْ يَرَوْا كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ
الْقُرُوْنِ اَنَّهُمْ اِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٣١﴾ وَاِنْ كُلٌّ لَّمَّا جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ﴿٣٢﴾

आयत नं० 22 से 32

और मेरे पास ऐसी कौन सी मजबूरी है कि मैं उस (माबूद) **की इबादत न करूं जिसने मुझ को पैदा किया** (यह ख़ूबी इबादत का हक़दार होने की दलील है) **और तुम सब को** (भी) **उसी के पास लौट कर जाना है** (इसलिए समझदारी इसी में है कि उसके पैग़म्बरों का कहना माना जाए)(22) **क्या मैं अल्लाह को छोड़ कर और ऐसे माबूद बनाऊं** (जिन की बेबसी की यह हालत है) **कि अगर अल्लाह तआ़ला मुझ को कुछ तकलीफ़ पहुंचाना चाहे तो न उन माबूदों की सिफ़ारिश मेरे कुछ काम आएगी और न वो मुझको** (ख़ुद अपनी क़ुदरत व ज़ोर से इस तकलीफ़ से) **छुड़ा सकें**(23) **अगर मैं ऐसा करूंगा तो खुली गुमराही में जा पडूंगा** (यानी अपने ऊपर रख कर दूसरों को सुनाया है यह भी नसीहत का एक तरीक़ा है)(24) **मैं तो तुम्हारे रब पर ईमान ला चुका सो तुम** (भी) **मेरी बात सुन लो** (और ईमान लाओ मगर उन लोगों पर कुछ असर न हुआ बल्कि उस को शहीद कर दिया)(25) **कहा गया** (अल्लाह की तरफ़ से उसके शहीद होते ही कि) **जा जन्नत में दाख़िल हो जा,** (उस वक़्त भी उस को अपनी क़ौम की फ़िक्र हुई) **कहने लगा काश मेरी क़ौम को यह बात मालूम हो जाती**(26) **कि मेरे रब ने** (ईमान और पैग़म्बरों की ताबेदारी की बरकत से) **मुझ को बख़्श दिया और मुझ को इज़्ज़तदारों में शामिल कर दिया** (तो इस बात को जान कर भी वो ईमान ले आते और इस तरह वो भी बख़्शे जाते और इज़्ज़त पाते)(27) **और** (जब उस बस्ती वालों ने पैग़म्बरों और उनके मानने वालों के साथ यह बरताव किया तो हम ने उनसे बदला लिया और बदला लेने के लिए) **हम ने उस** (शहीद) **की क़ौम पर उस** (की शहादत) **के बाद कोई फ़ौज** (फ़रिश्तों की) **आसमान से नहीं उतारी और न हम को उतारने की ज़रूरत थी**(28) (बल्कि उनके हलाक करने के लिए बस) **वो एक सख़्त आवाज़** (फ़रिश्ते की चीख़) **थी जिससे वो**

सब उसी दम ठन्डे होकर (यानी मर कर) **रह गये**(29) **अफ़सोस** (ऐसे) **बन्दों के हाल पर कि कभी उन के पास कोई पैग़म्बर ऐसा नहीं आया जिसकी उन्होंने हंसी न उड़ाई हो**(30) **क्या उन लोगों ने इस पर नज़र नहीं की कि हम उनसे पहले बहुत सी उम्मतें** (इसी झुटलाने और हंसी उड़ाने की वजह से) **हलाक कर चुके कि वो** (फिर) **उन की तरफ़** (दुनिया में) **लौट कर नहीं आते** (अगर इस बारे में सोचते तो झुटलाने व हंसी उड़ाने से बाज़ आजाते)(31) **और** (यह सज़ा तो झुटलाने वालों को दुनिया में दी गई और फिर आख़रत में) **उन सब में कोई ऐसा नहीं जो हमारे सामने हाज़िर न किया जाए** (वहां फिर सज़ा होगी और वो सज़ा सदा के लिए होगी)(32)

नोटः- यहां यह भी सबक़ मिला कि क़ौम की बदसलूकी के बाद भी उन हज़रात ने नसीहतें करना नहीं छोड़ा यहां तक कि जब उन बुज़ुर्ग को शहीद कर दिया गया तब भी उन के दिल से क़ौम की हमदर्दी न गई बल्कि ये तमन्ना कि काश क़ौम को ये मालूम हो जाता कि मेरे रब ने मुझको बख़्श दिया। ये ही वो चीज़ थी जिसने दूसरों के दिल में जगह बना ली और दीन फैला।

وَ اٰيَةٌ لَّهُمُ الْاَرْضُ الْمَيْتَةُ ۚۖ اَحْيَيْنٰهَا وَ اَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَاْكُلُوْنَ ﴿۳۳﴾ وَ جَعَلْنَا فِيْهَا جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّ
اَعْنَابٍ وَّ فَجَّرْنَا فِيْهَا مِنَ الْعُيُوْنِ ﴿۳۴﴾ لِيَاْكُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖ ۙ وَ مَا عَمِلَتْهُ اَيْدِيْهِمْ ؕ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ﴿۳۵﴾ سُبْحٰنَ
الَّذِيْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ وَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ وَ مِمَّا لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۶﴾ وَ اٰيَةٌ لَّهُمُ الَّيْلُ ۚۖ نَسْلَخُ
مِنْهُ النَّهَارَ فَاِذَا هُمْ مُّظْلِمُوْنَ ﴿۳۷﴾ وَ الشَّمْسُ تَجْرِيْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ؕ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿۳۸﴾ وَ الْقَمَرَ
قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ حَتّٰى عَادَ كَالْعُرْجُوْنِ الْقَدِيْمِ ﴿۳۹﴾ لَا الشَّمْسُ يَنْۢبَغِيْ لَهَاۤ اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَ لَا الَّيْلُ سَابِقُ
النَّهَارِ ؕ وَ كُلٌّ فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ﴿۴۰﴾ وَ اٰيَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿۴۱﴾ وَ خَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ
مِّثْلِهٖ مَا يَرْكَبُوْنَ ﴿۴۲﴾ وَ اِنْ نَّشَاْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيْخَ لَهُمْ وَ لَا هُمْ يُنْقَذُوْنَ ﴿۴۳﴾ اِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَ مَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ﴿۴۴﴾

आयत नं० 33 से 44

और (हमारी कुदरत की निशानियों में से) **एक निशानी उन लोगों के** (सबूत के) **लिए मुर्दा ज़मीन है** (और उसमें निशानी की बात यह है कि) **हम ने उसको** (बारिश से) **ज़िन्दा किया और हम ने उस** (ज़मीन) **से** (बहुत से) **अनाज निकाले सो उनमें से लोग खाते हैं**(33) **और** (ऐसे ही)

हम ने इस (ज़मीन में) **खजूरों और अंगूरों के बाग़ लगाए और उसमें** (बाग़ों को पानी देने के लिए) **नहरें जारी की**(34) **ताकि** (अनाज की तरह) **लोग बाग़ के फलों में से** (भी) **खाएं और उस** (फल व अनाज) **को उन के हाथों ने नहीं बनाया** (भले ही बीज बोना पानी देना उन्हीं के हाथों हुआ हो मगर बीज से पेड़ और पेड़ से फल पैदा करने में उन का कोई हाथ नहीं ख़ास अल्लाह ही का काम है), **सो** (ऐसे सबूत देख कर भी) **क्या शुक्र नहीं करते** (जिस की पहली सीढ़ी अल्लाह पर ईमान लाना है)(35) **पाक है वो ज़ात जिसने हर चीज़ के जोड़े पैदा किये उस पैदावार के भी जो ज़मीन से उगती हैं और** (ख़ुद) **उन इन्सानों में से भी** (जैसे मर्द और औरत) **और उन चीज़ों में भी जिन को** (आम) **लोग नहीं जानते**(36) **और एक निशानी इन लोगों के लिए रात** (का वक़्त) **है कि हम इस** (रात) **पर से दिन को उतार लेते हैं तो** (फिर रात आ जाती है और) **वो लोग अन्धेरे में रह जाते हैं**(37) **और** (एक निशानी) **सूरज** (है कि वो) **अपने ठिकाने की तरफ़ चलता रहता है, और यह तय किया हुआ है उस** (अल्लाह) **का जो ज़बरदस्त** (कुदरत वाला और) **इल्म वाला** (है कि अपने इल्म और कुदरत से सही इन्तिज़ाम करता) **है**(38) **और** (एक निशानी) **चान्द** (है कि उस की चाल) **के लिए मन्ज़िलें तय कीं** (कि हर दिन एक मन्ज़िल पूरी करता है) **यहां तक कि** (अपने आख़री फेरे में पतला होता-होता) **ऐसा रह जाता है जैसे खजूर की पुरानी टहनी** (कि पतली और घूमदार होती है)(39) **न सूरज की मजाल है कि चान्द को** (उसके निकलने के वक़्त यानी रात में जब कि वो चमकता हो) **जा पकड़े** (यानी वक़्त से पहले निकल कर उसको और उसके वक़्त यानी रात को हटाकर दिन बना दे जैसा कि चान्द भी सूरज को उसके रौशन होने के वक़्त नहीं पकड़ सकता कि दिन को हटाकर रात बना दे और उसमें चान्द चमक जाए) **और** (इसी तरह) **न रात दिन** (के तय वक़्त के ख़त्म होने) **से पहले आ सकती है** (जैसे दिन भी रात के तय वक़्त के ख़त्म होने से पहले नहीं आ सकता), **और** (चान्द और सूरज) **दोनो अपने-अपने मदार में** (हिसाब से इस तरह चल रहे हैं जैसे कि) **तैर रहे हैं** (और हिसाब से बाहर नहीं हो सकते कि रात दिन के हिसाब में कोई रूकावट आए)(40) **और एक निशानी उनके लिए यह है कि हम ने उन की औलाद को भरी हुई कशती में सवार किया** (इसमें तीन नेमतों की तरफ़ इशारा है भरी हुई कशती जो डूबने वाली चीज़ है उस को पानी पर तैराना दूसरे उन लोगों को औलाद देना तीसरे कारोबार के लिए माल देना)(41) **और हम ने उनके लिए कशती ही जैसी ऐसी चीज़ें पैदा कीं जिन पर ये लोग सवार होते हैं** (जिन में ज़मीनी सवारियां भी और हवाई जहाज़ भी आगये)(42) **और अगर हम चाहें तो उन को डुबा दें फिर न तो** (जिन चीज़ों को वो पूजते हैं

उनमें से) **कोई उन की फ़रियाद को पहुंचे** (जो डूबने से बचा ले) **और न उन की जान बचाई जाए(43) मगर यह हमारी ही महरबानी है और उन को एक तय वक़्त तक** (दुनिया की ज़िन्दगी से) **फ़ाइदा** (उठाने का मौक़ा) **देना** (है इसलिए मोहलत दे रक्खी) **है(44)**

नोटः- अल्लाह की क़ुदरत की निशानियां बता कर इन्सान को ईमान की दावत दी गई है।

وَ اِذَا قِيۡلَ لَهُمُ اتَّقُوۡا مَا بَيۡنَ اَيۡدِيۡكُمۡ وَ مَا خَلۡفَكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تُرۡحَمُوۡنَ ﴿۴۵﴾ وَ مَا تَاۡتِيۡهِمۡ مِّنۡ اٰيَةٍ مِّنۡ اٰيٰتِ
رَبِّهِمۡ اِلَّا كَانُوۡا عَنۡهَا مُعۡرِضِيۡنَ ﴿۴۶﴾ وَ اِذَا قِيۡلَ لَهُمۡ اَنۡفِقُوۡا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ۙ قَالَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا لِلَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا
اَنُطۡعِمُ مَنۡ لَّوۡ يَشَآءُ اللّٰهُ اَطۡعَمَهٗۤ ٭ۖ اِنۡ اَنۡتُمۡ اِلَّا فِىۡ ضَلٰلٍ مُّبِيۡنٍ ﴿۴۷﴾

आयत नं० 45 से 47

और जब उन लोगों से (तौहीद की दलीलें और उसके न मानने पर आने वाले अज़ाब की ख़बर सुना कर) **कहा जाता है कि तुम लोग उस अज़ाब से डरो जो तुम्हारे सामने** (यानी दुनिया में भी आ सकता) **है और जो तुम्हारे** (मरने के) **बाद** (यानी आख़रत में ज़रूर आने वाला) **है** (यानी अज़ाब से डरो और ईमान ले आओ) **ताकि तुम पर रहमत की जाए** (तो वो इस की ज़रा परवा नहीं करते)(45) **और** (वो तो ऐसे पत्थर दिल हो गये हैं कि) **उनके रब की आयतों में से कोई आयत भी उनके पास ऐसी नहीं आती जिससे ये मुंह न फेरते हों(46) और** (इसी तरह) **जब** (उन को अल्लाह की नेमतें याद दिला कर) **उन से कहा जाता है कि अल्लाह ने जो कुछ तुम को दिया है उसमें से** (अल्लाह की राह में फ़क़ीरों ग़रीबों पर) **ख़र्च करो तो** (शरारत और दिल्लगी से) **ये काफ़िर उन मुसलमानों से** (जिन्होंने अल्लाह की राह में ख़र्च करने के लिए कहा था) **यह कहते हैं कि क्या हम ऐसे लोगों को खाने को दें जिन को अगर अल्लाह चाहे तो** (बहुत कुछ) **खाने को देदे तुम खुली ग़लती में** (पड़े) **हो(47)**

नोटः- ऊपर आयत से मालूम हुआ कि काफ़िर लोग भी रोज़ी देने वाला अल्लाह ही को मानते थे मगर मुसलमानों के जवाब में दिल्लगी से यह कहा कि जब अल्लाह रोज़ी देने वाला है तो ग़रीबों को भी देगा हम क्यों दें यानी न ग़रीबों के देने पर मिलने वाले सवाब को देखा और न रोज़ी देने वाले का ही इबादत का हक़दार होना समझा।

وَ يَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٨﴾ مَا يَنْظُرُوْنَ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً تَاْخُذُهُمْ وَ هُمْ
يَخِصِّمُوْنَ ﴿٤٩﴾ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ تَوْصِيَةً وَّ لَاۤ اِلٰۤى اَهْلِهِمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٥٠﴾ وَ نُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَاِذَا هُمْ مِّنَ الْاَجْدَاثِ
اِلٰى رَبِّهِمْ يَنْسِلُوْنَ ﴿٥١﴾ قَالُوْا يٰوَيْلَنَا مَنْۢ بَعَثَنَا مِنْ مَّرْقَدِنَا ۜ هٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمٰنُ وَ صَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٥٢﴾ اِنْ
كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ﴿٥٣﴾ فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا وَّ لَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا
كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٥٤﴾ اِنَّ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِىْ شُغُلٍ فٰكِهُوْنَ ﴿٥٥﴾ هُمْ وَ اَزْوَاجُهُمْ فِىْ ظِلٰلٍ عَلَى الْاَرَآئِكِ
مُتَّكِـُٔوْنَ ﴿٥٦﴾ لَهُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّ لَهُمْ مَّا يَدَّعُوْنَ ﴿٥٧﴾ سَلٰمٌ ۟ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ ﴿٥٨﴾ وَ امْتَازُوا الْيَوْمَ اَيُّهَا
الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٥٩﴾ اَلَمْ اَعْهَدْ اِلَيْكُمْ يٰبَنِىْۤ اٰدَمَ اَنْ لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطٰنَ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٦٠﴾ وَّ اَنِ
اعْبُدُوْنِىْ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٦١﴾ وَ لَقَدْ اَضَلَّ مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيْرًا ؕ اَفَلَمْ تَكُوْنُوْا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٢﴾ هٰذِهٖ جَهَنَّمُ
الَّتِىْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿٦٣﴾ اِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٦٤﴾ اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰۤى اَفْوَاهِهِمْ وَ تُكَلِّمُنَاۤ
اَيْدِيْهِمْ وَ تَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٦٥﴾ وَ لَوْ نَشَآءُ لَطَمَسْنَا عَلٰۤى اَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَاَنّٰى
يُبْصِرُوْنَ ﴿٦٦﴾ وَ لَوْ نَشَآءُ لَمَسَخْنٰهُمْ عَلٰى مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوْا مُضِيًّا وَّ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَ مَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ
فِى الْخَلْقِ ؕ اَفَلَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٦٨﴾

आयत नं० 48 से 68

और ये (काफ़िर) **लोग** (इनकार के तौर पर पैग़म्बर और उनके मानने वालों से) **कहते हैं कि यह** (क़ियामत का) **वादा** (जिसकी ख़बर दी जाती है) **कब होगा** (बताओ) **अगर तुम** (इस दावे में) **सच्चे हो(48)** (अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि ये जो बार-बार पूछ रहे हैं तो जैसे) **ये लोग बस एक सख़्त आवाज़** (यानी क़ियामत का पहला सूर फूंकने) **के इन्तिज़ार में हैं जो उन** (काफ़िरों) **को आ पकड़ेगी और वो सब** (उस वक़्त) **आपस में** (आम दिनों की तरह) **लड़ झगड़ रहे होंगे(49) सो** (उस आवाज़ के साथ एक दम इस तरह फ़ना हो जाएंगे कि) **न तो वसीयत करने की मोहलत होगी और न अपने घर वालों के पास लौट कर जा सकेंगे** (बल्कि जो जिस हाल में होगा मर कर रह जाएगा)**(50) और** (फिर दोबारा) **सूर फूंका जाएगा तो वो सब यकायक क़ब्रों से** (निकल-निकल) **अपने रब की तरफ़** (यानी जहां हिसाब होगा) **तेज़ी से चलने लगेंगे(51)** (और वहां की हौल व दहशत देख कर) **कहेंगे कि हाय हमारी बद नसीबी हम को हमारी क़ब्रों से किसने**

उठा दिया (कि यहां से तो वहीं आराम में थे, फ़रिशते जवाब देंगे कि) **यह वो ही** (क़ियामत) **है जिस का अल्लाह तआला ने वादा किया था** (मगर तुम ने नहीं माना) **और पैग़म्बर सच कहते थे(52)** (आगे अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि) **वो** (दूसरी बार सूर का फूंका जाना भी पहली बार सूर फूंके जाने की तरह) **बस एक ज़ोर की आवाज़ होगी जिससे यकायक सब जमा होकर हमारे पास हाज़िर कर दिये जाएंगे(53) फिर उस दिन किसी आदमी पर ज़रा ज़ुल्म नहीं होगा और बस उन्हीं कामों का बदला मिलेगा जो तुम** (दुनिया में कुफ़्र वग़ैरह) **किया करते थे(54)** (यह तो दोज़ख़ी लोगों का हाल हुआ और) **जन्नती लोग** (उन का हाल यह है कि वो) **बेशक उस दिन अपने** (तफ़रीह के) **कामों में मगन होंगे(55) वो और उन की बीवियां घने सायों में मसहरियों पर तकिया लगाए बैठे होंगे(56)** (और) **उनके लिए वहां** (हर तरह के) **फल होंगे और जो कुछ मांगेंगे उनको मिलेगा(57)** (और) **उन को महरबान रब की तरफ़ से सलाम कहा जाएगा(58) और** (जहन्नमी लोगों को कहा जाएगा कि) **ऐ** (कुफ़्र करने वाले) **मुजरिमों आज** (ईमान वालों से) **अलग हो जाओ** (क्योंकि उनको जन्नत में भेजना है और तुम को जहन्नम में)**(59) ऐ आदम की औलाद** (और इसी तरह जिन्नात से भी कहा जाएगा) **क्या मैंने तुम को ताकीद नहीं कर दी थी कि तुम शैतान की इबादत न करना वो तुम्हारा खुला दुशमन है(60) और यह कि मेरी** (ही) **इबादत करना, ये ही सीधा रास्ता** (है इबादत से मुराद हर तरह की ताबेदारी) **है(61) और** (ऐसे ही तुम को शैतान के बारे में यह बात भी बताई थी कि) **वो तुम में** (से) **बहुत से लोगों को गुमराह कर चुका** (है जिनकी गुमराही का अन्जाम भी पहले काफ़िर क़ौमों के अज़ाब के क़िस्सों में बता दिया गया था)**, सो क्या तुम** (इतना भी) **नहीं समझते थे** (कि अगर हम उसके गुमराह करने से गुमराह हो जाएंगे तो हम भी इसी तरह अज़ाब के हक़दार होंगे)**(62) यह** (वो) **जहन्नम है जिसका तुम से** (कुफ़्र करने पर) **वादा किया जाया करता था(63) आज अपने कुफ़्र के बदले इसमें दाख़िल हो जाओ(64) आज हम उनके मुंह पर बन्द लगा देंगे** (जिससे ये झूटे बहाने न कर सकें) **और उनके हाथ हम से बात करेंगे और उनके पैर गवाही देंगे जो कुछ ये लोग किया करते थे(65) और** (यह अज़ाब तो आख़रत में होगा) **अगर हम चाहते तो** (दुनिया ही में उनके कुफ़्र की सज़ा में) **उनकी आंखें मिटा देते** (चाहे आंखो की रौशनी या आंखों ही को) **फिर ये रास्ते की तलाश में दौड़ते फिरते उन को कहां दिखाई देता** (जैसा कि क़ौमे लूत पर ऐसा ही अज़ाब आया था)**(66) और** (इससे बढ़ कर) **अगर हम चाहते तो** (उनके कुफ़्र की सज़ा में) **उनकी सूरतें बदल देते** (जैसे पहले कुछ लोग बन्दर और सुअर हो गये) **इस हालत से कि जहां हैं वहीं रह**

जाते (यानी जानवर बनाने के साथ-साथ अपाहज भी जो अपनी जगह से हिल न सकें) **जिससे ये लोग न आगे को चल सकते हैं और न पीछे को लौट सकते हैं**(67) **और** (इस पर हैरानी न होनी चाहिए देखो) **हम जिसकी उम्र ज़्यादा कर देते हैं** (यानी बहुत बूढ़ा कर देते हैं) **तो उस की हालत को पलट देते हैं** (यानी देखना सुनना समझना हुस्न जमाल और ताक़त सब चीज़ें घटते-घटते उलट जाती हैं जो एक तरह से सूरत का बदलना ही है)**, सो क्या** (इस हालत को देख कर भी) **वो लोग नहीं समझते** (जो यह बदलाव कर सकता है दूसरा बदलाव यानी सूरतें भी बदल सकता है तो उन लोगों को इसे देख कर डरना और कुफ़्र को छोड़ देना चाहिए)(68)

وَمَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهٗ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ وَّقُرْاٰنٌ مُّبِيْنٌ ۙ﴿٦٩﴾ لِّيُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَّيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى
الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧٠﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِّمَّا عَمِلَتْ اَيْدِيْنَاۤ اَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مٰلِكُوْنَ ﴿٧١﴾ وَذَلَّلْنٰهَا لَهُمْ فَمِنْهَا
رَكُوْبُهُمْ وَمِنْهَا يَاْكُلُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَلَهُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ ؕ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٧٣﴾ وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً
لَّعَلَّهُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٧٤﴾ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَهُمْ ۙ وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ مُّحْضَرُوْنَ ﴿٧٥﴾

आयत नं० 69 से 75

और (ये काफ़िर जो पैग़म्बरी के इनकार के लिए आप को शाइर कहते हैं यह ग़लत है क्योंकि) **हम ने आप को शाइरी** (करने) **का इल्म नहीं दिया और वो** (शाइरी) **आप की शान के लाइक़ भी नहीं, वो** (आप को दिया हुआ इल्म जिस को ये लोग शाइरी कहते हैं वो) **तो बस नसीहत** (की बात है) **और एक आसमानी किताब है जो हुक्मों को खोल कर बयान करने वाली है**(69) **ताकि** (हुक्मों के बयान के असर से) **ऐसे आदमी को ख़बरदार करें जो ज़िन्दा** (दिल रखता) **हो और ताकि काफ़िरों पर** (अज़ाब का) **इल्ज़ाम साबित हो जाए**(70) **क्या इन** (मुशरिक) **लोगों ने यह नहीं देखा कि हम ने उन के** (नफ़े के) **लिए अपने हाथों की बनाई चीज़ों में से चौपाए** (जानवर) **पैदा किये और** (हमारे मालिक बनाने से) **ये लोग उनके मालिक बन रहे हैं**(71) **और** (उसके कुछ नफ़े बताते हैं कि) **हम ने उन जानवरों को इन का ताबेदार बना दिया सो** (वो इनके काम करते हैं जैसा कि) **उनमें कुछ तो उन की सवारियां हैं और कुछ को वो खाते हैं**(72) **और उनमें इन लोगों के लिए और भी नफ़े हैं** (जैसे बाल खाल हड्डी वग़ैरह बहुत से तरीक़ों से काम में लाए जाते हैं) **और** (उनमें इन लोगों के) **पीने की चीज़ें भी हैं** (यानी दूध)**, सो क्या** (इस पर

भी) **ये लोग शुक्र नहीं करते** (और शुक्र का सबसे पहला क़दम तौहीद पर ईमान है)(73) **और उन्होंने** (शुक्र व तौहीद के बजाए कुफ़्र व शिर्क अपनाया जैसा कि) **अल्लाह के सिवा दूसरे माबूद बना रक्खे हैं इस उम्मीद पर कि उन को इन** (माबूदों की तरफ़ से) **मदद मिले**(74) (लेकिन) **वो उन की कुछ मदद कर ही नहीं सकते और** (मदद तो क्या करते और उल्टे) **वो** (माबूद) **उन लोगों के हक़ में एक** (मुख़ालिफ़) **फ़रीक़ हो जाएंगे जो** (हिसाब की जगह लाकर) **हाज़िर किये जाएंगे** (और वहां हाज़िर होकर उनके ख़िलाफ़ गवाही देंगे)(75)

नोटः- हज़रत हसन रज़ि० कहते हैं कि इन लोगों ने बुतों को ख़ुदा तो इस लिए बनाया था कि ये उनकी मदद करेंगे और हो यह रहा है कि वो तो इन की मदद करने के क़ाबिल नहीं ख़ुद ये ही लोग जो उनकी इबादत करते हैं ख़ुद ही उनके ख़ादिम और उनके सिपाही बने हुए हैं उनकी हिफ़ाज़त करते हैं कोई उनके ख़िलाफ़ काम करे तो ये उनकी तरफ़ से लड़ते हैं। (क़रतबी)

فَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٧٦﴾ اَوَلَمْ يَرَ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ
خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٧﴾ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَّنَسِيَ خَلْقَهٗ ؕ قَالَ مَنْ يُّحْيِ الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيْمٌ ﴿٧٨﴾ قُلْ يُحْيِيْهَا الَّذِيْٓ
اَنْشَاَهَآ اَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيْمُ ﴿٧٩﴾ ۨالَّذِيْ جَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الشَّجَرِ الْاَخْضَرِ نَارًا فَاِذَآ اَنْتُمْ مِّنْهُ
تُوْقِدُوْنَ ﴿٨٠﴾ اَوَلَيْسَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ ؔ بَلٰى ۗ وَهُوَ الْخَلّٰقُ
الْعَلِيْمُ ﴿٨١﴾ اِنَّمَآ اَمْرُهٗٓ اِذَآ اَرَادَ شَيْـًٔا اَنْ يَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٨٢﴾ فَسُبْحٰنَ الَّذِيْ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّ
اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٣﴾

आयत नं० 76 से 83

(जब ये लोग ऐसी साफ़ दलीलें सुनकर भी नहीं मानते) **तो इन लोगों की** (इनकार की) **बातों से आप दुखी न हों, बेशक हम सब जानते हैं जो कुछ ये छुपाते हैं और जो कुछ ऐलानिया करते हैं** (इसलिए तय वक़्त पर इनको इनके कामों की सज़ा मिलेगी)(76) **क्या** (उस) **आदमी को** (जो क़ियामत का इनकार करता है) **यह पता नहीं कि हमने उस को मनी की एक बून्द से पैदा किया** (तो चाहिए तो यह था कि अपनी पैदाइश की शुरू की हालत को देख कर शर्माता और समझ जाता कि दोबारा पैदा कर देना क्या मुश्किल है) **सो** (उसने ऐसा न किया बल्कि) **ऐलानिया ऐतराज़ करने**

लगा(77) और हमारे बारे में तो वो बातें बनाता है और अपनी असल को भूल गया (कि हम ने उसको एक बून्द से पूरा इन्सान बना दिया), **कहता है कि हड्डियों को कौन ज़िन्दा करेगा जब कि वो गल चुकी होंगी(78) आप जवाब दे दीजिए कि उन को वो ज़िन्दा करेगा जिसने पहली बार उन को पैदा किया** (है अब दोबारा उनमें ज़िन्दगी पैदा करना क्या मुश्किल) **है, और वो हर तरह का पैदा करना जानता है** (यानी शुरू में किसी चीज़ को पैदा कर देना या पैदा की हुई को फ़ना करके दोबारा पैदा कर देना)(79) **वो ऐसा** (कुदरत वाला) **है कि हरे पेड़ से तुम्हारे लिए आग पैदा कर देता है फिर तुम उससे और आग सुलगा लेते हो** (जैसा कि अरब में एक पेड़ था मरूख़ दूसरा इफ़ार इन दोनो की टहनी को आपस में रगड़ने से आग पैदा हो जाती थी तो जिस कुदरत वाले ने हरे पेड़ के पानी में आग पैदा कर दी तो दूसरी बेजान चीज़ों में ज़िन्दगी पैदा कर देना उसके लिए क्या मुश्किल है)(80) **और जिसने आसमान व ज़मीन पैदा किये हैं क्या वो इसकी कुदरत नहीं रखता कि इन जैसे आदमियों को** (दोबारा) **पैदा करदे, क्यों नहीं** (ज़रूर कर सकता है) **और वो बड़ा पैदा करने वाला ख़ूब जानने वाला है(81)** (और उसकी कुदरत ऐसी है कि) **जब वो किसी चीज़** (के पैदा करने) **का इरादा करता है तो सिर्फ़ इतना कह देता है कि होजा बस वो हो जाती है(82) तो** (इन सब बातों से साबित हो गया कि) **उस की पाक ज़ात है हर चीज़ उसके क़ब्ज़े में है और तुम सब को उसी के पास लौट कर जाना है** (यानी क़ियामत के दिन)(83)।

37-सूरत-साफ़्फ़ात

इस मक्की सूरत में '5' रूकू और '182' आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

وَ الصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ۙ﴿۱﴾ فَالزّٰجِرٰتِ زَجۡرًا ۙ﴿۲﴾ فَالتّٰلِیٰتِ ذِکۡرًا ۙ﴿۳﴾ اِنَّ اِلٰـہَکُمۡ لَوَاحِدٌ ؕ﴿۴﴾ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ وَ مَا
بَیۡنَہُمَا وَ رَبُّ الۡمَشَارِقِ ؕ﴿۵﴾ اِنَّا زَیَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنۡیَا بِزِیۡنَۃِۣ الۡکَوَاکِبِ ۙ﴿۶﴾ وَ حِفۡظًا مِّنۡ کُلِّ شَیۡطٰنٍ مَّارِدٍ ۚ﴿۷﴾ لَا
یَسَّمَّعُوۡنَ اِلَی الۡمَلَاِ الۡاَعۡلٰی وَ یُقۡذَفُوۡنَ مِنۡ کُلِّ جَانِبٍ ٭ۖ﴿۸﴾ دُحُوۡرًا وَّ لَہُمۡ عَذَابٌ وَّاصِبٌ ۙ﴿۹﴾ اِلَّا مَنۡ خَطِفَ
الۡخَطۡفَۃَ فَاَتۡبَعَہٗ شِہَابٌ ثَاقِبٌ ﴿۱۰﴾

आयत नं० 01 से 10

क़सम है उन फ़रिशतों की जो (इबादत में या अल्लाह का हुक्म सुनने के वक़्त) **सफ़ बान्धकर खड़े होते हैं(01) फिर** (क़सम है) **उन फ़रिशतों की जो** (आसमानी ख़बरें लाने से शैतानों को) **रोकने वाले हैं(02) फिर** (क़सम है) **उन फ़रिशतों की जो ज़िक्र** (यानी अल्लाह की तस्बीह) **पढ़ने वाले हैं(03)** (उन सब की क़सम खाकर कहते हैं कि) **तुम्हारा** (सच्चा) **माबूद एक है(04)** (और इस तौहीद की दलील यह है कि) **वो रब है आसमानों का और ज़मीन का और जो कुछ उनके बीच में** (है यानी उन सब चीज़ों का मालिक) **है और रब है** (सब सितारों के) **निकलने की जगहों का(05)** (और) **हम ही ने रौनक़ दी है इस तरफ़ वाले आसमान को सितारों की सजावट से(06) और** (इन्हीं सितारों से आसमान की ख़बरों की) **हिफ़ाज़त भी की है हर शरारती शैतान से(07)** (और इसी हिफ़ाज़त के इन्तिज़ाम की वजह से) **वो शैतान ऊपर की दुनिया** (यानी फ़रिशतों) **की बातें नहीं सुन सकते** (यानी अक्सर तो मार खाने के डर से दूर ही रहते हैं और अगर कभी इसकी कोशिश करते भी हैं तो जिस तरफ़ भी जाएं) **हर तरफ़ से उन पर मार पड़ती है(08) उन्हें धक्के दे दिये जाते हैं** (यह सज़ा और रूसवाई तो उन्हें दुनिया में मिलती है) **और** (फिर आख़रत में) **उनके लिए** (जहन्नम का) **सदा का अज़ाब होगा** (बस कोई आसमानी ख़बर सुनने से पहले ही उन्हें मार भगाया जाता है वो सुनने का इरादा लेकर आते हैं मगर नाकाम रहते हैं)(09)

मगर जो शैतान कुछ ख़बर ले ही भागे तो एक दहकता हुआ अंगारा उसका पीछा करता है (कि उसको जला फूंक देता है इसलिए जो कुछ सुना है उसे दूसरों तक पहुंचाने में नाकाम रहता है ये सारे इन्तिज़ाम अल्लाह तआ़ला की तौहीद के सबूत हैं)(**10**)

नोटः- एक हदीस मे है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा से फ़रमाया ''तुम (नमाज़ में) इस तरह सफ़बन्दी क्यों नहीं करते जिस तरह फ़रिशते अपने रब के सामने करते हैं'' सहाबा ने पूछा फ़रिशते अपने रब के सामने किस तरह सफ़ बन्दी करते हैं तो आप ने जवाब दिया ''वो सफ़ों को पूरा करते हैं और सफ़ में मिलकर खड़े होते हैं'' (यानी बीच में ख़ाली जगह नहीं छोड़ते)। (तफ़सीर मज़हरी)

और एक हदीस में ताकीद है कि ''सीधे रहो आगे पीछे मत हो वर्ना तुम्हारे दिलों में इख़्तिलाफ़ पैदा हो जाएगा''। (मुस्लिम)

मसअलाः- हज़रत हसन बसरी रह० ने फ़रमाया कि- ''अल्लाह तआ़ला को हक़ है वो अपनी मख़लूक़ में से जिस चीज़ की चाहे क़सम खाले मगर किसी दूसरे के लिए अल्लाह के सिवा किसी की क़सम खाना जाइज़ नहीं''।

فَاسْتَفْتِهِمْ اَهُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمْ مَّنْ خَلَقْنَا ؕ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ طِيْنٍ لَّازِبٍ ⑪ بَلْ عَجِبْتَ وَ يَسْخَرُوْنَ ۠⑫ وَ
اِذَا ذُكِّرُوْا لَا يَذْكُرُوْنَ ۠⑬ وَ اِذَا رَاَوْا اٰيَةً يَّسْتَسْخِرُوْنَ ۠⑭ وَ قَالُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۚۖ⑮ ءَاِذَا مِتْنَا وَ كُنَّا
تُرَابًا وَّ عِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ۙ⑯ اَوَ اٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ؕ⑰ قُلْ نَعَمْ وَ اَنْتُمْ دَاخِرُوْنَ ۚ⑱

आयत नं० 11 से 18

(जब तौहीद की दलीलों से पता चल गया कि अल्लाह तआ़ला ज़मीन, आसमान, चान्द सूरज और सितारे जैसी मख़लूक़ को पैदा करने की क़ुदरत रखते हैं और सब कुछ उसी के क़ब्ज़े में है) **तो आप इन** (आख़रत का इनकार करने वालों) **से पूछिए कि इन का पैदा करना ज़्यादा मुश्किल है या हमारी पैदा की हुई दूसरी चीज़ों का** (यानी ज़मीन, आसमान, चान्द सितारों का पैदा करना ज़्यादा मुश्किल है, क्योंकि) **हम ने इन लोगों को** (तो आदम अलैहिस्सलाम के पैदा करने के वक़्त इसी

मामूली) **चिपकती मिट्टी** (यानी लेसदार गारे) **से पैदा किया है** (जिसमें न कुछ ताक़त है न सख़्ती और इन्सान ज़्यादा ताक़तवर और सख़्त नहीं है अब सोचने की बात है कि जब हम ऐसी ताक़तवर और सख़्त चीज़ों को नाहोत से वजूद में लाने की क़ुदरत रखते हैं तो इन्सान जैसी कमज़ोर चीज़ को एक बार मौत देकर दोबारा ज़िन्दा करने पर क्यों क़ुदरत न होगी मगर ऐसी साफ़ दलीलें सुन कर भी ये लोग आख़िरत को नहीं मानते)(11) **बल्कि** (इससे बढ़ कर बात यह है कि) **आप तो** (इनके इनकार से) **अचम्भा करते हैं और ये लोग** (इनकार से बढ़कर आख़िरत के अक़ीदे की) **हंसी उड़ाते हैं**(12) **और जब उनको** (अक़ली दलीलों से) **समझाया जाता है तो ये समझते नहीं**(13) **और जब ये कोई मोजिज़ा देखते हैं** (जो आप की पैग़म्बरी साबित करने के लिए उनको दिखाया जाता है जिससे आख़िरत का अक़ीदा साबित किया जाए) **तो** (ख़ुद) **उसकी हंसी उड़ाते हैं**(14) **और कहते हैं कि ये तो खुला जादू** (है क्योंकि मोजिज़े को मानने से आप की पैग़म्बरी साबित हो जाएगी और आप को पैग़म्बर मानने के बाद आप का बयान किया हुआ आख़िरत का अक़ीदा भी मानना ज़रूरी) **है**(15) (और कहते हैं कि) **भला जब मर गये और मिट्टी और हड्डियां हो गये तो क्या हम** (फिर) **ज़िन्दा किये जाएंगे**(16) **और क्या हमारे पहले बाप दादा भी** (ज़िन्दा होंगे)(17) **आप कह दीजिए कि हां** (ज़रूर ज़िन्दा होंगे) **और तुम रूसवा भी होंगे**(18)

नोटः- मोजिज़ा चूंकि आम लोगों की क़ुदरत से बाहर होता है इसलिए उसको जादू कह कर मानने से इनकार करते हैं हालांकि जादू भी मोजिज़े की बराबरी नहीं कर सकता जैसा कि मूसा अलैहिस्सलाम के क़िस्से में हुआ।

فَاِنَّمَا هِیَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ فَاِذَا هُمْ يَنْظُرُوْنَ ﴿١٩﴾ وَقَالُوْا يٰوَيْلَنَا هٰذَا يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿٢٠﴾ هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِیْ كُنْتُمْ
بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٢١﴾ اُحْشُرُوا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا وَاَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ﴿٢٢﴾ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَاهْدُوْهُمْ اِلٰی صِرَاطِ
الْجَحِيْمِ ﴿٢٣﴾ وَقِفُوْهُمْ اِنَّهُمْ مَّسْئُوْلُوْنَ ﴿٢٤﴾ مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُوْنَ ﴿٢٥﴾ بَلْ هُمُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُوْنَ ﴿٢٦﴾

आयत नं० 19 से 26

बस वो (क़ियामत तो) **एक ज़ोरदार आवाज़ होगी** (यानी दूसरा सूर) **सो** (इससे) **सब यकायक** (ज़िन्दा होकर हैरान से एक दूसरे को) **देखने लगेंगे**(19) **और** (पछताकर) **कहेंगे हाय हमारी बदनसीबी यह तो वो ही हिसाब** (और बदले) **का दिन** (मालूम होता) **है**(20) (कहा जाएगा कि हां)

यह वो ही फ़ैसले का दिन है जिसको तुम झुटलाया करते थे(21) (आगे क़ियामत ही की कुछ बातों का बयान है कि फ़रिशतों को हुक्म होगा) **जमा कर लो ज़ालिमों को** (यानी जो कुफ़्र व शिर्क फैलाने वाले थे) **और उनके साथियों को** (जो उनका कहा मानते थे) **और उनको भी जिन की ये इबादत किया करते थे**(22) **अल्लाह को छोड़ कर** (यानी शैतान और बुत) **फिर उन सब को दोज़ख़ का रास्ता दिखाओ** (यानी उधर ले जाओ)(23) **और** (फिर यह हुक्म होगा कि अच्छा) **इन को** (ज़रा) **ठहराओ इन से कुछ पूछा जाएगा**(24) (उन से यह सवाल होगा) **अब तुम को क्या हुआ कि** (अज़ाब का हुक्म सुन कर) **एक दूसरे की मदद नहीं** (करते यानी काफ़िरों के बड़े वो इन्सान हों या शैतान जो दुनिया में बहकाया करते थे अब अपने पीछे चलने वालों की मदद नहीं) **करते**(25) (मगर इस सवाल के बाद भी वो मदद न कर सकेंगे) **बल्कि वो सब के सब उस दिन सर झुकाए** (खड़े) **होंगे**(26)

नोटः- दुनिया में अपनी इबादत करवाने वाले झूटे ख़ुदा भी जब जहन्नम में होंगे तो काफ़िरों को उनके बेबस होने का अच्छी तरह पता चल जाएगा।

وَ اَقۡبَلَ بَعۡضُهُمۡ عَلٰى بَعۡضٍ يَّتَسَآءَلُوۡنَ ﴿۲۷﴾ قَالُوۡۤا اِنَّكُمۡ كُنۡتُمۡ تَاۡتُوۡنَنَا عَنِ الۡيَمِيۡنِ ﴿۲۸﴾ قَالُوۡا بَلۡ لَّمۡ تَكُوۡنُوۡا
مُؤۡمِنِيۡنَ ﴿۲۹﴾ وَ مَا كَانَ لَنَا عَلَيۡكُمۡ مِّنۡ سُلۡطٰنٍ ۚ بَلۡ كُنۡتُمۡ قَوۡمًا طٰغِيۡنَ ﴿۳۰﴾ فَحَقَّ عَلَيۡنَا قَوۡلُ رَبِّنَاۤ ۖ اِنَّا
لَذَآئِقُوۡنَ ﴿۳۱﴾ فَاَغۡوَيۡنٰكُمۡ اِنَّا كُنَّا غٰوِيۡنَ ﴿۳۲﴾ فَاِنَّهُمۡ يَوۡمَئِذٍ فِى الۡعَذَابِ مُشۡتَرِكُوۡنَ ﴿۳۳﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَفۡعَلُ
بِالۡمُجۡرِمِيۡنَ ﴿۳۴﴾ اِنَّهُمۡ كَانُوۡۤا اِذَا قِيۡلَ لَهُمۡ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ۙ يَسۡتَكۡبِرُوۡنَ ﴿۳۵﴾ وَ يَقُوۡلُوۡنَ اَئِنَّا لَتَارِكُوۡۤا اٰلِهَتِنَا
لِشَاعِرٍ مَّجۡنُوۡنٍ ﴿۳۶﴾ بَلۡ جَآءَ بِالۡحَقِّ وَ صَدَّقَ الۡمُرۡسَلِيۡنَ ﴿۳۷﴾ اِنَّكُمۡ لَذَآئِقُوا الۡعَذَابِ الۡاَلِيۡمِ ﴿۳۸﴾ وَ مَا تُجۡزَوۡنَ اِلَّا
مَا كُنۡتُمۡ تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۳۹﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الۡمُخۡلَصِيۡنَ ﴿۴۰﴾

आयत नं० 27 से 40

और (बजाए इसके कि मुशरिक लोग एक दूसरे की मदद कर सकें उनमें उस वक़्त उल्टा झगड़ा होगा और) **वो एक दूसरे की तरफ़ मुंह करके सवाल जवाब** (यानी झगड़ा) **करने लगेंगे**(27) (जैसा कि) **ताबेदार** (अपने बड़ों से) **कहेंगे कि** (हम को तो तुम ने गुमराह किया क्योंकि बहकाने के लिए) **तुम हम पर बड़े ज़ोरों से चढ़-चढ़ कर आते** (थे यानी तुम हम पर ख़ूब ज़ोर डाल कर हमें गुमराह करने की कोशिश किया करते) **थे**(28) **सरदार लोग यह कहेंगे कि नहीं बल्कि तुम**

ख़ुद ही ईमान नहीं लाए थे(29) और (हम पर नाहक़ इल्ज़ाम लगाते हो क्योंकि) **हमारा तुम पर कोई ज़ोर तो था ही नहीं बल्कि तुम ख़ुद ही सरकशी किया करते थे(30) सो** (जब कुफ़्र करने वाले हम भी थे और तुम भी तो मालूम हुआ कि) **हम सब ही पर हमारे रब की** (पहले ही) **यह बात साबित हो चुकी थी कि हम सब को** (अज़ाब का) **मज़ा चखना है(31) तो** (इसका सामान यह हो गया कि) **हम ने तुम को बहकाया** (जिससे तुम हमारे ज़ोर ज़बरदस्ती के बिना ख़ुद अपनी मर्ज़ी से गुमराह हुए और) **हम ख़ुद भी** (अपनी मर्ज़ी से) **गुमराह थे(32)** (अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि जब दोनों फ़रीक़ का कुफ़्र में साझी होना साबित है) **तो वो सब के सब उस दिन अज़ाब में** (भी) **साझी रहेंगे(33)** (और) **हम ऐसे मुजरिमों के साथ ऐसा ही** (बरताव) **किया करते हैं(34) वो लोग ऐसे थे कि** (तौहीद का भी इनकार करते थे और पैग़म्बरी का भी और) **जब उन से** (पैग़म्बर के वास्ते से) **कहा जाता था कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं तो** (उसके मानने से) **घमन्ड किया करते थे(35) और कहा करते थे कि क्या हम अपने माबूदों को एक शाइर दीवाने** (के कहने) **की वजह से छोड़ देंगे(36)** (बस इस में तौहीद और पैग़म्बरी दोनों का इनकार हो गया, अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि यह पैग़म्बर न शाइर हैं न मजनूं) **बल्कि** (पैग़म्बर हैं कि) **एक सच्चा दीन लेकर आए हैं और** (तौहीद की बातों में) **दूसरे पैग़म्बरों की तस्दीक़ करते** (हैं यानी ऐसे उसूल बताते हैं जिसमें सब पैग़म्बर एक) **हैं(37) बस** (उनसे कहा जाएगा कि) **तुम सब** (छोटों और बड़ों) **को दर्दनाक अज़ाब चखना पड़ेगा(38) और** (इस हुक्म में तुम पर कोई ज़ुल्म नहीं हुआ क्योंकि) **तुम को उसी का बदला मिलेगा जो कुछ तुम** (कुफ़्र वग़ैरह) **किया करते थे(39) हां मगर जो अल्लाह के ख़ास किये हुए बन्दे हैं** (यानी वो ईमान वाले बन्दे जिन्होंने नेक काम किये ऐसे लोग अज़ाब से बचे रहेंगे)(40)

नोटः- किसी के बहकाए में आकर गुनाह करने से बहकाने वाले का गुनाह तो बढ़ जाता है मगर गुनाह करने वाला यह मजबूरी बताकर कि मुझे बहका दिया गया था अज़ाब से नहीं बच सकता अलबत्ता अगर किसी को गुनाह के लिए मजबूर कर दिया गया हो कि अपनी जान बचाने के लिए वो गुनाह कर बैठा हो तो इन्शाअल्लाह उसकी मुआफ़ी की उम्मीद है।

أُولَٰٓئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُومٌ ﴿٤١﴾ فَوَاكِهُ ۚ وَهُم مُّكْرَمُونَ ﴿٤٢﴾ فِي جَنَّٰتِ النَّعِيمِ ﴿٤٣﴾ عَلَىٰ سُرُرٍ مُّتَقَٰبِلِينَ ﴿٤٤﴾ يُطَافُ
عَلَيْهِم بِكَأْسٍ مِّن مَّعِينٍ ﴿٤٥﴾ بَيْضَآءَ لَذَّةٍ لِّلشَّٰرِبِينَ ﴿٤٦﴾ لَا فِيهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنزَفُونَ ﴿٤٧﴾ وَعِندَهُمْ

قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ عِيْنٌ ۙ﴿۴۸﴾ كَاَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُوْنٌ ﴿۴۹﴾ فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿۵۰﴾ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ
اِنِّيْ كَانَ لِيْ قَرِيْنٌ ۙ﴿۵۱﴾ يَّقُوْلُ اَئِنَّكَ لَمِنَ الْمُصَدِّقِيْنَ ﴿۵۲﴾ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَدِيْنُوْنَ ﴿۵۳﴾
قَالَ هَلْ اَنْتُمْ مُّطَّلِعُوْنَ ﴿۵۴﴾ فَاطَّلَعَ فَرَاٰهُ فِيْ سَوَآءِ الْجَحِيْمِ ﴿۵۵﴾ قَالَ تَاللّٰهِ اِنْ كِدْتَّ لَتُرْدِيْنِ ۙ﴿۵۶﴾ وَلَوْلَا
نِعْمَةُ رَبِّيْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ﴿۵۷﴾ اَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِيْنَ ۙ﴿۵۸﴾ اِلَّا مَوْتَتَنَا الْاُوْلٰى وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿۵۹﴾ اِنَّ
هٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۶۰﴾ لِمِثْلِ هٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعٰمِلُوْنَ ﴿۶۱﴾

आयत नं० 41 से 61

उन (अल्लाह के नेक बन्दों) **के वास्ते ऐसी चीज़ें हैं जिन का हाल** (दूसरी सूरतों में) **मालूम** (हो चुका) **है(41) यानी मेवे** (हैं) **और वो लोग बड़ी इ़ज़्ज़त से रहेंगे(42) आराम के बाग़ों में(43) ऊंचे तख़्तों पर आमने सामने बैठे होंगे(44)** (और) **उनके पास ऐसा शराब का प्याला लाया जाएगा** (यानी ग़िलमान लाएंगे) **जो बहती हुई शराब से भरा जाएगा(45)** (जो देखने में) **सफ़ेद होगी** (और पीने में) **पीने वालों के लिए मज़ेदार होगी(46)** (और) **न उसमें सर का दर्द होगा** (जैसे दुनिया की शराब में होता है) **और न उनकी अक़्ल बहकेगी(47) और उनके पास नीची निगाह वाली बड़ी-बड़ी आंखों वाली** (हूरें) **होंगी(48)** (जिन का रंग ऐसा साफ़ होगा कि) **जैसे अन्डे हैं जो** (परों के नीचे) **छुपे हुए हैं** (कि धूल मिट्टी और धब्बे से बचे होते हैं इसमें सफ़ाई बताई गई है)**(49) फिर** (जब सब लोग एक जगह जमा होंगे तो) **एक दूसरे की तरफ़ ध्यान करके बातचीत करेंगे(50)** (उस वक़्त) **उन** (जन्नती लोगों) **में से एक कहने वाला कहेगा कि** (दुनिया में) **मेरा एक साथी था(51) वो** (मुझ से अचम्भे से) **कहा करता था कि क्या तुम आख़रत की ज़िन्दगी को सच मानते हो(52) क्या जब मर जाएंगे और मिट्टी और हड्डियां हो जाएंगे तो क्या हम** (दोबारा ज़िन्दा किये जाएंगे और ज़िन्दा करके) **बदला और सज़ा दिये जाएंगे** (यानी वो आख़रत का इनकार करता था इसलिए वो ज़रूर दोज़ख़ में गया होगा)**(53) कहा जाएगा** (अल्लाह की तरफ़ से कि ऐ जन्नत वालो) **क्या तुम झांक कर** (उसको) **देखना चाहते हो** (अगर चाहो तो तुम को इजाज़त है)**(54) सो वो आदमी** (जिसने क़िस्सा बयान किया था) **झांक कर देखेगा तो उस को जहन्नम के बीचो बीच** (पड़ा हुआ) **देखेगा(55)** (उस को वहां देख कर उससे) **कहेगा कि अल्लाह की क़सम तू तो मुझ को बर्बाद ही करने को** (था यानी मुझ को भी आख़रत का न मानने वाला बनाने की कोशिश किया करता) **था(56) और अगर मेरे रब की** (मुझ पर) **महरबानी न होती** (कि

मुझ को उसने सही यक़ीन पर जमाए रक्खा) **तो मैं भी** (तेरी तरह) **गरिफ़्तार लोगों में होता**(57) (और उसके बाद वो जन्नती अपने साथ वालों से ख़ुशी से कहेगा कि) **क्या अब हमें मौत नहीं आएगी**(58) **सिवाए उस मौत के जो पहले** (दुनिया में) **आचुकी और न हम को अज़ाब होगा**(59) (आगे अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि जन्नत की जितनी नेमतें ऊपर बयान की गईं) **ये बेशक बड़ी कामयाबी है**(60) **ऐसी ही कामयाबी** (हासिल करने) **के लिए अमल करने वालों को अमल करना** (चाहिए यानी ईमान लाना और नेक काम करना) **चाहिए**(61)।

नोटः- ऊपर आयत में जो दो दोस्तों का क़िस्सा बयान किया गया है जिनमें एक मोमिन था और दूसरा काफ़िर इससे एक सबक़ मिलता है कि दोस्ती करने में इस बात का ध्यान रखना ज़रूरी है कि दोस्ती से दीन और आख़रत का नुक़सान न उठाना पड़े वर्ना फिर सिवाए पछताने के कुछ हाथ न आएगा।

اَذٰلِكَ خَيْرٌ نُّزُلًا اَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّوْمِ ۞ اِنَّا جَعَلْنٰهَا فِتْنَةً لِّلظّٰلِمِيْنَ ۞ اِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِيْٓ اَصْلِ
الْجَحِيْمِ ۞ طَلْعُهَا كَاَنَّهٗ رُءُوْسُ الشَّيٰطِيْنِ ۞ فَاِنَّهُمْ لَاٰكِلُوْنَ مِنْهَا فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ۞ ثُمَّ اِنَّ لَهُمْ
عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيْمٍ ۞ ثُمَّ اِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَاِلَى الْجَحِيْمِ ۞ اِنَّهُمْ اَلْفَوْا اٰبَآءَهُمْ ضَآلِّيْنَ ۞ فَهُمْ عَلٰٓى
اٰثٰرِهِمْ يُهْرَعُوْنَ ۞ وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ اَكْثَرُ الْاَوَّلِيْنَ ۞ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا فِيْهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ۞ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ۞ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ۞

आयत नं० 62 से 74

(अज़ाब और सवाब दोनों का मिलान करके अब बताओ) **भला यह महमानी** (जन्नत की नेमतों की) **बेहतर है** (जो ईमान वालों के लिए है) **या ज़क़्क़ूम का पेड़** (जो काफ़िरों के लिए है)(62) **हम ने उस पेड़ को** (आख़रत की सज़ा बनाने के सिवा दुनिया में भी उन) **ज़ालिमों के लिए इम्तिहान की चीज़ बनाया** (है कि इसको सुनकर तस्दीक़ करते हैं या झुटलाते हैं जैसा कि काफ़िरों ने झुटलाया और हंसी उड़ाई और कहने लगे आग में पेड़ कैसे हो सकता) **है**(63) (इसका जवाब अल्लाह तआला ने यह दिया कि) **वो पेड़ दोज़ख़ की गहराई से निकलता** (है और चूंकि वो ख़ुद आग ही में पैदा होता है इसलिए वहां रहना मुश्किल नहीं जैसे समन्दर नामी जानवर आग ही में पैदा होता है और आग ही में रहता) **है**(64) **उस के फल** (देखने में) **ऐसे हैं जैसे सांप के फन** (बस ऐसे पेड़ से ज़ालिमों

की महमानी होगी)(65) **तो वो लोग** (भूक की बेचैनी में जब और कुछ न मिलेगा तो) **उससे खाएंगे और** (चूंकि भूक से बेचैन होंगे) **उसी से पेट भरेंगे**(66) **फिर** (जब प्यास से बेचैन होकर पानी मांगेंगे तो) **उन को खौलता हुआ पानी पीप मिला हुआ दिया जाएगा**(67) **फिर** (यह नहीं कि इस मुसीबत से छुटकारा हो जाए बल्कि) **आख़री ठिकाना उन का** (सदा के लिए) **दोज़ख़ ही की तरफ़ होगा**(68) (और उन्हें यह सज़ा इसलिए दी गई कि) **उन्होंने** (अल्लाह के हुक्मों पर चलना नहीं चाहा बल्कि) **अपने बड़ों को गुमराही की हालत में पाया**(69) **फिर ये भी उन्हीं के क़दमों पर दौड़ते** (थे यानी शौक़ और दिलचस्पी से उन्हीं के ग़लत रास्ते पर चलते) **थे**(70) **और इन** (मौजूदा काफ़िरों) **से पहले हो चुके लोगों में भी अक्सर गुमराह हो चुके हैं**(71) **और हम ने उनमें भी ख़बरदार करने वाले** (पैग़म्बर) **भेजे थे**(72) **अब देख लीजिए उन लोगों का कैसा** (बुरा) **अन्जाम हुआ जिन को ख़बरदार किया गया था** (और उन्होंने न माना था कि उन पर दुनिया ही में क्या-क्या अज़ाब आए)(73) **हां मगर जो अल्लाह के चुने हुए** (यानी ईमान वाले) **बन्दे थे** (वो इस दुनिया के अज़ाब से भी बचे रहे)(74)

नोटः- किसी को यह शुबह हो कि जहन्नम में पेड़ कैसे हो सकता है तो जब वो पैदा ही जहन्नम में होता है तो अल्लाह तआला ने उस में ऐसी सिफ़त रख दी कि वो आग में जलने के बजाए उस से फलता फूलता है।

وَلَقَدْ نَادٰىنَا نُوْحٌ فَلَنِعْمَ الْمُجِيْبُوْنَ ۝٧٥ وَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ۝٧٦ وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهٗ هُمُ الْبٰقِيْنَ ۝٧٧
وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِى الْاٰخِرِيْنَ ۝٧٨ سَلٰمٌ عَلٰى نُوْحٍ فِى الْعٰلَمِيْنَ ۝٧٩ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ۝٨٠ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا
الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٨١ ثُمَّ اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ ۝٨٢

आयत नं० 75 से 82

और हम को नूह (अलैहिस्सलाम) **ने** (मदद के लिए) **पुकारा** (यानी दुआ की) **सो** (हम ने उनकी मदद की और) **हम ख़ूब फ़रियाद सुनने वाले हैं**(75) **और हम ने उन को और उनके लोगों को बड़े भारी ग़म से बचा** (दिया जो काफ़िरों के झुटलाने और सताने से हुआ था कि तूफ़ान से काफ़िरों को डुबा दिया और उनके लोगों को बचा) **दिया**(76) **और हम ने उन्हीं की औलाद को बाक़ी रहने दिया** (और किसी की नस्ल नहीं चली)(77) **और हमने उनके बाद आने वाले लोगों**

में यह बात (बहुत ज़माने के लिए) **रहने दी**(78) **कि नूह पर सलाम हो सारे जहान वालों में** (यानी ख़ुदा करे सब दुनिया वाले इन्सान, जिन्नात व फ़रिश्ते सलाम भेजा करें)(79) **हम नेक लोगों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं**(80) **बेशक वो हमारे ईमानदार बन्दों में से थे**(81) **फिर हमने दूसरे लोगों को** (यानी काफ़िरों को पानी में) **डुबा दिया**(82)

नोटः- आसमानी किताबों के मानने वाले सभी मज़हबों के लोग हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को अपना बड़ा मानते हैं। और मुसलमान तो क़ियामत तक उन को सलाम भेजते रहेंगे।

وَ اِنَّ مِنۡ شِيۡعَتِهٖ لَاِبۡرٰهِيۡمَ ﴿۸۳﴾ اِذۡ جَآءَ رَبَّهٗ بِقَلۡبٍ سَلِيۡمٍ ﴿۸۴﴾ اِذۡ قَالَ لِاَبِيۡهِ وَ قَوۡمِهٖ مَا ذَا تَعۡبُدُوۡنَ ﴿۸۵﴾ اَئِفۡكًا
اٰلِهَةً دُوۡنَ اللّٰهِ تُرِيۡدُوۡنَ ﴿۸۶﴾ فَمَا ظَنُّكُمۡ بِرَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿۸۷﴾ فَنَظَرَ نَظۡرَةً فِى النُّجُوۡمِ ﴿۸۸﴾ فَقَالَ اِنِّىۡ سَقِيۡمٌ ﴿۸۹﴾ فَتَوَلَّوۡا
عَنۡهُ مُدۡبِرِيۡنَ ﴿۹۰﴾ فَرَاغَ اِلٰٓى اٰلِهَتِهِمۡ فَقَالَ اَلَا تَاۡكُلُوۡنَ ﴿۹۱﴾ مَا لَكُمۡ لَا تَنۡطِقُوۡنَ ﴿۹۲﴾ فَرَاغَ عَلَيۡهِمۡ ضَرۡبًۢا بِالۡيَمِيۡنِ ﴿۹۳﴾
فَاَقۡبَلُوۡۤا اِلَيۡهِ يَزِفُّوۡنَ ﴿۹۴﴾ قَالَ اَتَعۡبُدُوۡنَ مَا تَنۡحِتُوۡنَ ﴿۹۵﴾ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمۡ وَمَا تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۹۶﴾ قَالُوا ابۡنُوۡا لَهٗ بُنۡيَانًا
فَاَلۡقُوۡهُ فِى الۡجَحِيۡمِ ﴿۹۷﴾ فَاَرَادُوۡا بِهٖ كَيۡدًا فَجَعَلۡنٰهُمُ الۡاَسۡفَلِيۡنَ ﴿۹۸﴾

आयत नं० 83 से 98

और उन्हीं (नूह अलैहिस्सलाम) **के तरीक़े पर चलने वालों में से इब्राहीम भी थे**(83) (उन का वो क़िस्सा याद कीजिए) **जब कि उन्होंने अपने रब की तरफ़ साफ़ दिल से ध्यान किया** (था साफ़ दिल का मतलब यह है कि उन का दिल ग़लत अक़ीदों और दिखावे से पाक) **था**(84) **जब कि उन्होंने अपने बाप से और अपनी क़ौम से** (जो बुत परस्त थी) **कहा कि तुम किस** (बेकार) **चीज़ की इबादत किया करते हो**(85) **क्या झूट-मूट के माबूदों को अल्लाह के सिवा** (माबूद बनाना) **चाहते हो**(86) **तो सारे जहानों के रब के बारे में तुम क्या सोचते** (हो यानी क्या उसके माबूद होने में कोई शक है अगर शक है तो उसे दूर कर सकते) **हो**(87) (इसी तरह बहस होती रहती थी कि एक बार का क़िस्सा है कि उनका कोई त्यौहार आया क़ौम के लोगों ने उन से भी कहा कि हमारे मेले में चलो) **तो इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **ने सितारों को एक निगाह डाल कर देखा**(88) **और कह दिया कि मेरी तबीअत ख़राब है** (इसलिए मेले में नही जा सकता)(89) **बस वो लोग** (उनकी यह मजबूरी सुनकर) **उन को छोड़ कर चले गये** (कि बेबात बीमारी में उनको और उनकी वजह से दूसरों को तकलीफ़ होगी)(90) **उसके बाद यह** (यानी इब्राहीम अलैहिस्सलाम) **उनके बुतों में**

जा घुसे और (हंसी करते हुए उन से) **कहने लगे क्या तुम** (ये चढ़ावे जो तुम्हारे सामने रक्खे हैं) **खाते नहीं हो**(91) (और) **तुम को क्या हुआ तुम बोलते भी नहीं**(92) **फिर उन पर ज़ोरदार हमला किया और मारने लगे** (और कुल्हाड़ी से उन को तोड़ फोड़ दिया)(93) **सो** (उन लोगों को जब इस का पता चला तो) **वो लोग उन के पास** (घबराए हुए गुस्से में) **दौड़ते हुए आए**(94) (और बात चीत शुरू हुई) **इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा क्या तुम उन चीज़ों को पूजते हो जिन को ख़ुद** (अपने हाथ से) **बनाते हो** (जो तुम्हारा मुहताज हो वो ख़ुदा क्या होगा)(95) **जब कि तुम को और तुम्हारी बनाई हुई चीज़ों को** (सब को) **अल्लाह ही ने पैदा किया है** (तो इबादत उसी की करना चाहिए)(96) **वो लोग** (जब बहस में हार गये तो झल्लाकर आपस में) **कहने लगे कि इब्राहीम के लिए आग का घर बनाओ** (और उसमें आग दहकाकर) **उन को उस दहकती आग में डाल दो**(97) **बस** (इसी तरह) **उन लोगों ने इब्राहीम के साथ बुराई करनी चाही थी** (कि यह हलाक हो जाएंगे) **सो हमने उन्हीं को नीचा दिखा दिया** (जिसका क़िस्सा सूरत अम्बिया में आ चुका है)(98)

नोटः- हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की क़ौम में सितारों के इल्म का बड़ा चर्चा था। वो लोग सितारों को देख कर अपने कामों को तय किया करते थे इसलिए हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने सितारों की तरफ़ देख कर अपनी तबीअत के ख़राब होने का ज़िक्र किया ताकि मेले में न जाने का बहाना हो जाए। वर्ना ख़ुद हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम सितारों के इल्म के असर को न मानते थे।

हज़रत उमर रज़ि० का बयान है कि ''सितारों के इल्म से इतना इल्म हासिल करो जिससे ज़मीन और समन्दर में रास्ते जान सको इसके बाद रूक जाओ'' यानी सितारों की चाल का अपने कामों में असर मानना हमारा तरीक़ा नहीं।

وَ قَالَ اِنِّیْ ذَاهِبٌ اِلٰی رَبِّیْ سَیَهْدِیْنِ ﴿۹۹﴾ رَبِّ هَبْ لِیْ مِنَ الصّٰلِحِیْنَ ﴿۱۰۰﴾ فَبَشَّرْنٰهُ بِغُلٰمٍ حَلِیْمٍ ﴿۱۰۱﴾ فَلَمَّا بَلَغَ
مَعَهُ السَّعْیَ قَالَ یٰبُنَیَّ اِنِّیْۤ اَرٰی فِی الْمَنَامِ اَنِّیْۤ اَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَا ذَا تَرٰی ؕ قَالَ یٰۤاَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ۫
سَتَجِدُنِیْۤ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِیْنَ ﴿۱۰۲﴾ فَلَمَّاۤ اَسْلَمَا وَ تَلَّهٗ لِلْجَبِیْنِ ﴿۱۰۳﴾ۚ وَ نَادَیْنٰهُ اَنْ یّٰۤاِبْرٰهِیْمُ ﴿۱۰۴﴾ۙ قَدْ
صَدَّقْتَ الرُّءْیَا ۚ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِی الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۱۰۵﴾ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْبَلٰٓؤُا الْمُبِیْنُ ﴿۱۰۶﴾ وَ فَدَیْنٰهُ بِذِبْحٍ عَظِیْمٍ ﴿۱۰۷﴾ وَ
تَرَكْنَا عَلَیْهِ فِی الْاٰخِرِیْنَ ﴿۱۰۸﴾ۖ سَلٰمٌ عَلٰۤی اِبْرٰهِیْمَ ﴿۱۰۹﴾ كَذٰلِكَ نَجْزِی الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۱۱۰﴾ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۱۱۱﴾ وَ
بَشَّرْنٰهُ بِاِسْحٰقَ نَبِیًّا مِّنَ الصّٰلِحِیْنَ ﴿۱۱۲﴾ وَ بٰرَكْنَا عَلَیْهِ وَ عَلٰۤی اِسْحٰقَ ؕ وَ مِنْ ذُرِّیَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَّ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ مُبِیْنٌ ﴿۱۱۳﴾ؑ

आयत नं० 99 से 113

और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम को जब उन लोगों के ईमान लाने की उम्मीद न रही तो) **कहने लगे कि मैं तो** (तुम से हिजरत करके) **अपने रब की** (राह में किसी) **तरफ़ चला जाता हूं वो मुझ को** (अच्छी जगह) **पहुंचा ही देगा(99)** (बस मुल्क शाम जा पहुंचे और यह दुआ की कि) **या रब मेरे मुझ को एक नेक बेटा दे दीजिए(100) तो हमने उनको एक सहार वाले बेटे की ख़ुशख़बरी दी** (और बेटा पैदा हुआ और होशियार हुआ)**(101) तो जब वो लड़का ऐसी उम्र को पहुंचा कि इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **के साथ चलने फिरने लगा तो इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **ने** (एक ख़्वाब देखा कि मैं उस बेटे को अल्लाह के हुक्म से ज़बह कर रहा हूं और गला कटा हुआ देखना साबित नहीं और बस जब आंख खुली तो इसको अल्लाह का हुक्म समझे क्योंकि पैग़म्बरों का ख़्वाब भी वही होता है और इस हुक्म पर अमल करने को तैयार हो गये फिर बेटे की राय जानना भी ज़रूरी समझा इसलिए उससे) **कहा कि बेटा मैं देखता हूं कि मैं तुम को** (अल्लाह के हुक्म से) **ज़बह कर रहा हूं सो तुम भी सोच लो तुम्हारी क्या राय है, वो बोले अब्बा जान** (इसमें मुझ से पूछने की क्या बात है जब आप को अल्लाह की तरफ़ से हुक्म किया गया है तो) **आप को जो हुक्म हुआ है आप** (बिना झिजक) **कीजिए इन्शाअल्लाह आप मुझे सहार करने वालों में से देखेंगे(102) बस जब दोनो ने** (अल्लाह के हुक्म को) **मान लिया और बाप ने बेटे को** (ज़बह करने के लिए) **करवट पर लिटाया(103) और** (चाहते थे कि गला काट डालें और उस वक़्त) **हमने उन को आवाज़ दी कि ऐ इब्राहीम** (शाबाश है)**(104) तुम ने ख़्वाब को सच्चा कर दिखाया** (यानी ख़्वाब में जो हुक्म हुआ था अपनी तरफ़ से उस पर पूरा अमल किया बस अब इन को छोड़ दो तो जान की जान बच गई और ऊंचे दर्जे मिले) **हम नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं** (कि दोनो जहान का आराम दिया)**(105) बेशक यह था भी बड़ा इम्तिहान** (जिसको सिवाए पूरे ईमान वाले के दूसरा सहार नहीं सकता और इस इम्तिहान में हज़रत इस्माईल भी साथ रहे)**(106) और हमने एक बड़ा जानवर ज़बह करने के लिए उसके बदले में दिया** (कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम से वो ज़बह कराया गया और बड़ा इसलिए कि वो जन्नत से लाया गया था)**(107) और हमने बाद में आने वालों में यह बात उनके लिए रहने दी(108) कि इब्राहीम पर सलाम हो** (जैसा कि उनके नाम के साथ अब तक अलैहिस्सलाम कहा जा रहा है)**(109) हम नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला दिया करते** (हैं कि लोग उन्हें दुआएं और सलामती की ख़ुशख़री देते) **हैं(110) बेशक वो हमारे ईमानदार बन्दों में से थे(111) और हम ने** (एक इनआम उन पर यह किया कि) **उन को इसहाक़** (बेटे) **की**

ख़ुशख़बरी दी कि नबी और नेक लोगों में से होंगे(112) **और हमने इब्राहीम पर और इसहाक़ पर बरकतें उतारीं** (उन बरकतों में से एक यह है कि उनकी नस्ल बहुत फैली और उस नस्ल में बहुत से नबी पैदा हुए), **और** (फिर आगे) **उन दोनों की नस्ल में कुछ अच्छे भी हैं और कुछ ऐसे भी हैं** (जो बुरे काम करके) **अपना खुला नुक़सान कर रहे हैं**(113)

नोटः- यहां मालूम हो गया कि सिर्फ़ पैग़म्बर या नेक लोगों की औलाद होना बख़्शिश के लिए काफ़ी नहीं है बल्कि बख़्शिश का असली मदार इन्सान के अक़ीदों और आमाल का सही होने पर है। और यहूदियों का यह समझ लेना कि हम पैग़म्बर की औलाद हैं हमारी तो बख़्शिश हो जाएगी यह अपने आप को धोका देना है।

وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ (۱۱۴) وَنَجَّيْنٰهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ (۱۱۵) وَنَصَرْنٰهُمْ فَكَانُوْا هُمُ
الْغٰلِبِيْنَ (۱۱۶) وَاٰتَيْنٰهُمَا الْكِتٰبَ الْمُسْتَبِيْنَ (۱۱۷) وَهَدَيْنٰهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ (۱۱۸) وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِي الْاٰخِرِيْنَ (۱۱۹)
سَلٰمٌ عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ (۱۲۰) اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ (۱۲۱) اِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ (۱۲۲) وَاِنَّ اِلْيَاسَ
لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ (۱۲۳) اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَلَا تَتَّقُوْنَ (۱۲۴) اَتَدْعُوْنَ بَعْلًا وَّتَذَرُوْنَ اَحْسَنَ الْخَالِقِيْنَ (۱۲۵) اللّٰهَ رَبَّكُمْ وَ
رَبَّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ (۱۲۶) فَكَذَّبُوْهُ فَاِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ (۱۲۷) اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ (۱۲۸) وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي
الْاٰخِرِيْنَ (۱۲۹) سَلٰمٌ عَلٰٓى اِلْ يَاسِيْنَ (۱۳۰) اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ (۱۳۱) اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ (۱۳۲)

आयत नं० 114 से 132

और हमने मूसा और हारून (अलैहिमुस्सलाम) **पर भी अहसान किया** (कि उन को पैग़म्बरी और दूसरे कमाल दिये)**(114) और हमने उन दोनो को और उनकी क़ौम** (यानी बनी इस्राईल) **को बड़े ग़म** (यानी फ़िरऔन की तरफ़ से पहुंचाई जाने वाली तकलीफ़ों) **से बचा दिया**(115) **और हम ने उन सब की** (फ़िरऔन के मुक़ाबिले में) **मदद की तो** (आख़ीर में) **ये ही लोग जीते** (कि फ़िरऔन को डुबा दिया और इन को हुकूमत मिली)(116) **और हम ने** (फ़िरऔन के डूबने के बाद) **उन दोनो** (साहिबों) **को** (यानी मूसा अलैहिस्सलाम को असल में और हारून अलैहिस्सलाम को साथ में) **साफ़ किताब दी** (यानी तौरेत कि उसमें हुक्मों को साफ़ बयान किया गया था)(117) **और हमने उनको सीधे रास्ते पर चलाया** (जिसका बड़ा दर्जा यह है कि उन्हें मासूम नबी बनाया)(118) **और हमने उन**

दोनों के बाद आने वाले लोगों में यह बात रहने दी(119) **कि मूसा और हारून पर सलाम हो** (जैसा कि दोनों हज़रात के नामों के साथ आज तक अलैहिस्सलाम लिखा जाता है)(120) **हम नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला दिया करते** (हैं कि उनको तारीफ़ और दुआ का हक़्दार बना देते) **हैं**(121) **बेशक वो दोनों हमारे** (पूरे) **ईमानदार बन्दों में से थे** (इसलिए बदला भी पूरा दिया गया)(122) **और इलयास** (अलैहिस्सलाम) **भी** (बनी इस्राईल के) **पैग़म्बरों में से थे**(123) (उन का उस वक़्त का क़िस्सा बताइये) **जब कि उन्होंने अपनी क़ौम** (बनी इस्राईल) **से कहा** (जो कि बुतपरस्ती करते थे) **कि तुम अल्लाह से नहीं डरते**(124) **क्या तुम बअल को** (जो एक बुत का नाम था) **पूजते हो और उस** (की इबादत) **को छोड़े बैठे हो जो सबसे बढ़ कर बनाने वाला** (है क्योंकि और लोग तो उसी की पैदा की हुई चीज़ों का कुछ बना सकते हैं और वो हर चीज़ का पैदा करने वाला है और कोई दूसरा जान नहीं डाल सकता बल्कि वो ही जान डालता) **है**(125) (और वो) **अल्लाह** (सच्चा माबूद) **तुम्हारा भी रब है और तुम्हारे पहले बाप दादों का भी रब है**(126) **बस उन लोगों ने** (इस तौहीद के दावे में) **उनको झुटलाया तो** (इस झुटलाने की सज़ा में) **वो लोग** (आख़रत के अज़ाब में) **पकड़े जाएंगे**(127) **मगर जो अल्लाह के ख़ास बन्दे** (यानी ईमान वाले) **थे** (वो सवाब और इनआम में होंगे)(128) **और हमने इलयास के लिए बाद में आने वाले लोगों में** (बहुत ज़माने के लिए) **यह बात रहने दी**(129) **कि इलयासीन पर सलाम हो** (इलयासीन भी इलयास अलैहिस्सलाम का नाम है)(130) **हम नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं**(131) **बेशक वो हमारे** (पूरे) **ईमानदार बन्दों में से थे**(132)।

नोटः- तख़लीक़ (यानी पैदा करना) अल्लाह तआ़ला की सिफ़त है। किसी दूसरे के लिए यह लफ़्ज़ कहना जाइज़ नहीं। आज के ज़माने में जो रिवाज चल पड़ा है कि शाइरों के कलामों और मुसव्विरों की तस्वीरों को उन की तख़लीक़ कह दिया जाता है वो बिल्कुल जाइज़ नहीं। ख़ालिक़ अल्लाह के सिवा कोई नहीं हो सकता।

وَ اِنَّ لُوْطًا لَّمِنَ الْمُرْسَلِیْنَ ﴿۱۳۳﴾ؕ اِذْ نَجَّیْنٰهُ وَ اَهْلَهٗۤ اَجْمَعِیْنَ ﴿۱۳۴﴾ۙ اِلَّا عَجُوْزًا فِی الْغٰبِرِیْنَ ﴿۱۳۵﴾ ثُمَّ دَمَّرْنَا
الْاٰخَرِیْنَ ﴿۱۳۶﴾ وَ اِنَّكُمْ لَتَمُرُّوْنَ عَلَیْهِمْ مُّصْبِحِیْنَ ﴿۱۳۷﴾ وَ بِالَّیْلِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۳۸﴾ؒ وَ اِنَّ یُوْنُسَ لَمِنَ
الْمُرْسَلِیْنَ ﴿۱۳۹﴾ؕ اِذْ اَبَقَ اِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿۱۴۰﴾ۙ فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِیْنَ ﴿۱۴۱﴾ۚ فَالْتَقَمَهُ الْحُوْتُ وَ هُوَ
مُلِیْمٌ ﴿۱۴۲﴾ فَلَوْ لَاۤ اَنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِیْنَ ﴿۱۴۳﴾ۙ لَلَبِثَ فِیْ بَطْنِهٖۤ اِلٰى یَوْمِ یُبْعَثُوْنَ ﴿۱۴۴﴾ۚ فَنَبَذْنٰهُ بِالْعَرَآءِ وَ هُوَ سَقِیْمٌ ﴿۱۴۵﴾ۚ

وَ اَنۡۢبَتۡنَا عَلَیۡهِ شَجَرَةً مِّنۡ یَّقۡطِیۡنٍ ﴿۱۴۶﴾ۚ وَ اَرۡسَلۡنٰهُ اِلٰی مِائَةِ اَلۡفٍ اَوۡ یَزِیۡدُوۡنَ ﴿۱۴۷﴾ۚ فَاٰمَنُوۡا فَمَتَّعۡنٰهُمۡ اِلٰی حِیۡنٍ ﴿۱۴۸﴾ؕ

आयत नं० 133 से 148

और बेशक लूत (अलैहिस्सलाम) **भी** (हमारे) **पैग़म्बरों से थे**(133) (उन का उस वक़्त का क़िस्सा याद कीजिए) **जब कि हम ने उन को और उनके लोगों को सब को** (अज़ाब से) **बचा दिया**(134) **सिवाए उस बुढ़िया** (यानी उन की बीवी) **के कि वो** (अज़ाब के अन्दर) **रह जाने वालों में रह गई**(135) **फिर हम ने और सब को** (जो लूत अलैहिस्सलाम और उनके लोगों के सिवा थे) **हलाक कर दिया** (जिन का क़िस्सा पहले भी आ चुका है)(136) **और** (ऐ मक्का वालो) **तुम उन** (के रहने की जगह) **पर** (मुल्क शाम के सफ़र में) **गुज़रा करते हो** (कभी) **सुबह होते**(137) **और** (कभी) **रात में** (गुज़रा करते हो)**, तो क्या** (उन की बर्बादी की निशानियां देख कर भी) **समझते नहीं हो** (कि कुफ़्र का क्या अन्जाम हुआ और जो आगे कुफ़्र करेगा उसके लिए भी ये ही ख़तरा है)(138) **और बेशक यूनुस** (अलैहिस्सलाम) **भी** (हमारे) **पैग़म्बरों में से थे**(139) (उन का उस वक़्त का क़िस्सा याद कीजिए) **जब कि** (उन्होंने अपनी क़ौम को ईमान न लाने पर अज़ाब की ख़बर दी और ख़ुद वहां से चले गये और जब तय वक़्त पर अज़ाब के आसार दिखाई दिये तो क़ौम के लोग अपनी ग़लती पर पछताए और ईमान ले आए और वो अज़ाब टल गया, यूनुस अलैहिस्सलाम को जब यह ख़बर हुई तो शर्म की वजह से अपनी राय से अल्लाह तआला की साफ़ इजाज़त के बिना कहीं दूर चले जाने का इरादा करके अपनी जगह से) **भाग कर** (चले, रास्ते में दरिया था, उसमें मुसाफ़िरों से भरी हुई कशती उस) **भरी कशती के पास पहुंचे**(140) (कशती चली तो तूफ़ान आ गया, कशती वाले कहने लगे कि हम में कोई नया क़ुसूरवार है उसको कशती से अलग करना चाहिए उस आदमी का पता लगाने के लिए सब की राय इस पर हुई कि क़ुरा अन्दाज़ी की जाए यानी लाटरी डाली जाए) **सो यूनुस** (अलैहिस्सलाम) **भी क़ुरा में शामिल हुए तो** (क़ुरा में) **ये ही मुलज़िम ठहरे** (यानी लाटरी में उन्हीं का नाम निकला बस उन्होंने अपने को दरिया में डाल दिया शायद किनारा नज़दीक होगा तैर कर किनारे पर पहुंचने का इरादा होगा बस ख़ुदकुशी का शक न किया जाए)(141) **फिर** (जब दरिया में गिरे तो हमारे हुक्म से) **उन को मच्छली ने** (साबुत) **निगल लिया और ये** (उस वक़्त) **अपनी** (ग़लती पर) **पछता** (रहे थे और ज़बान से भी तस्बीह के साथ तौबा कर) **रहे थे**(142) **सो अगर** (उस वक़्त) **तस्बीह** (व तौबा) **करने वालों में से न होते**(143) **तो क़ियामत तक उसी के पेट में रहते** (मतलब यह कि पेट से निकलना नसीब न होता उस की ख़ुराक बना दिये जाते)(144) **तो** (चूंकि

उन्होंने तस्बीह और तौबा की इसलिए) **हम ने** (उन को इससे बचाए रक्खा और मच्छली के पेट से निकाल कर) **उन को एक मैदान में डाल दिया** (यानी मच्छली को हुक्म दिया कि किनारे पर उगल दे) **और वो उस वक़्त निढाल थे** (क्योंकि मच्छली के पेट में काफ़ी हवा और ख़ुराक न पहुंचती थी)(145) **और हम ने** (धूप से बचाने के लिए) **उन पर एक बेलदार पेड़ भी उगा दिया था** (और कोई पहाड़ी बकरी उन्हें दूध पिला जाती थी)(146) **और उनको एक लाख या उस से भी ज़्यादा लोगों की तरफ़** (शहर नैनवा में) **पैग़म्बर बना कर भेजा था**(147) **फिर वो लोग** (पूरी तरह) **ईमान लाए तो** (ईमान की बरकत से) **हम ने उन को एक ज़माने तक** (यानी उम्र की मुद्दत तक) **ऐश** (आराम) **दिया**(148)।

नोटः- क़ुरा अन्दाज़ी के ज़रिए न किसी का हक़ साबित किया जा सकता है और न किसी को मुजरिम ठहराया जा सकता है। इससे तो सिर्फ़ कुछ जाइज़ रास्तों में एक रास्ते को चुना जा सकता है जैसे अगर दो बीवियां हैं तो सफ़र में किसे साथ ले जाए ऐसा करने से दूसरी के दिल को ठेस न पहुंचेगी। हज़रत यूनुस के क़िस्से में उस दौर के दस्तूर के हिसाब से तूफ़ान से कशती को बचाने के लिए किसी एक आदमी को दरिया में डाला जाना था किस को डाला जाए यह लाटरी डाल कर तय किया गया जिस में उन का नाम आया।

فَاسْتَفْتِهِمْ اَلِرَبِّكَ الْبَنَاتُ وَ لَهُمُ الْبَنُوْنَ ﴿١٤٩﴾ اَمْ خَلَقْنَا الْمَلٰٓئِكَةَ اِنَاثًا وَّ هُمْ شٰهِدُوْنَ ﴿١٥٠﴾ اَلَآ اِنَّهُمْ مِّنْ
اِفْكِهِمْ لَيَقُوْلُوْنَ ﴿١٥١﴾ وَلَدَ اللّٰهُ ۙ وَ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١٥٢﴾ اَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِيْنَ ﴿١٥٣﴾ مَا لَكُمْ ۟ كَيْفَ
تَحْكُمُوْنَ ﴿١٥٤﴾ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿١٥٥﴾ اَمْ لَكُمْ سُلْطٰنٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٥٦﴾ فَاْتُوْا بِكِتٰبِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٥٧﴾ وَ جَعَلُوْا بَيْنَهٗ وَ
بَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا ؕ وَ لَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ اِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ﴿١٥٨﴾ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٥٩﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ
الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٦٠﴾ فَاِنَّكُمْ وَ مَا تَعْبُدُوْنَ ﴿١٦١﴾ مَاۤ اَنْتُمْ عَلَيْهِ بِفٰتِنِيْنَ ﴿١٦٢﴾ اِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ الْجَحِيْمِ ﴿١٦٣﴾ وَ مَا مِنَّاۤ اِلَّا
لَهٗ مَقَامٌ مَّعْلُوْمٌ ﴿١٦٤﴾ وَّ اِنَّا لَنَحْنُ الصَّآفُّوْنَ ﴿١٦٥﴾ وَ اِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُوْنَ ﴿١٦٦﴾

आयत नं० 149 से 166

(तौहीद की दलीलें तो ऊपर बयान हो चुकी) **तो अब** (इसके बाद) **उन लोगों से** (जो फ़रिशतों और जिन्नात को अल्लाह का साझी ठहराते हैं इस तरह कि फ़रिशतों को नऊज़ुबिल्लाह अल्लाह की

बेटियां और जिन्नात के सरदारों की बेटियों को उन फ़रिशतों की माएं कहते थे सो इन सब से) **पूछिए कि क्या अल्लाह के लिए तो बेटियां** (हों) **और तुम्हारे लिए बेटे** (हों यानी जब अपने लिए बेटे पसन्द करते हो तो इस अक़ीदे में अल्लाह के लिए बेटियां कैसे ठहराते हो बस इस अक़ीदे में एक ख़राबी तो यह है ही)(149) **हां** (दूसरी बात सुनो कि) **क्या हम ने फ़रिशतों को औरत बनाया है और वो** (उनके बनाने के वक़्त) **देख रहे थे** (यानी एक दूसरी बुराई यह है कि फ़रिशतों पर बिना दलील औरत होने का इल्ज़ाम रखते हैं)(150) **ख़ूब सुन लो कि वो लोग अपनी मन घड़त बात की वजह से कहते हैं**(151) **कि** (नऊज़ुबिल्लाह) **अल्लाह औलाद वाला है और वो बेशक** (बिल्कुल) **झूटे** (हैं बस इस अक़ीदे में तीसरी बुराई यह है कि अल्लाह को औलाद वाला बताते) **हैं**(152) **क्या अल्लाह तआ़ला ने बेटों के मुक़ाबिले में बेटियां ज़्यादा पसन्द की हैं**(153) **तुम को क्या हो गया तुम कैसा इन्साफ़ करते** (हो जिसको ख़ुद भी बुरा समझते) **हो**(154) **फिर क्या तुम सोच** (समझ) **से काम नहीं लेते हो** (कि यह अक़ीदा अक़्ल के भी ख़िलाफ़ है)(155) **या तुम्हारे पास** (इस पर) **कोई साफ़ दलील मौजूद है** (यानी आसमानी किताब)(156) **तो तुम अगर** (इसमें) **सच्चे हो तो अपनी वो किताब लाओ**(157) **और इन लोगों ने अल्लाह में और जिन्नात में** (भी) **रिशतेदारी बना रक्खी** (है जिस का झूट होना और भी साफ़ है क्योंकि बीवी जिस काम के लिए होती है उससे अल्लाह तआ़ला पाक) **है, और जिन्नात का तो** (ख़ुद) **यह मानना है कि** (उनमें जो काफ़िर हैं) **वो** (अज़ाब में) **गरिफ़्तार होंगे**(158) (और अज़ाब में गरिफ़्तार क्यों न हों जब कि अल्लाह के बारे में बुरी-बुरी बातें बयान करते हैं, हालांकि) **अल्लाह उन बातों से पाक है जो ये बयान करते हैं**(159) **मगर जो अल्लाह के ख़ास** (यानी ईमान वाले) **बन्दे हैं** (वो उस अज़ाब से बचे रहेंगे)(160) **सो तुम और जिन-जिन की इबादत करते हो**(161) (सब मिलकर भी) **अल्लाह से किसी को फेर नहीं सकते** (जैसी तुम कोशिश किया करते हो)(162) **मगर उसी को जो कि** (अल्लाह के नज़दीक) **जहन्नम में जाने वाला है**(163) **और** (फ़रिशते तो यह कहते हैं कि) **हम में से हर एक** (के काम) **का दर्जा तय है** (उसी के पूरा करने में लगे रहते हैं अपनी राय से कुछ नहीं कर सकते)(164) **और हम** (अल्लाह के सामने हुक्म सुनने के वक़्त या इबादत के वक़्त अदब से) **सफ़ बान्धे खड़े होते हैं**(165) **और हम** (अल्लाह की) **पाकी बयान करने** (यानी तस्बीह पढ़ने) **में लगे रहते** (हैं बस हर तरह ताबेदार बन्दे हैं, सो जब फ़रिशते ख़ुद अपनी बन्दगी का इक़रार कर रहे) **हैं** (तो फिर उनकी इबादत कोरी बेवक़ूफ़ी है बस फ़रिशतों और जिन्नात के बारे में ख़ुदाई का ऐतक़ाद रखना ग़लत साबित हो गया)(166)।

नोटः- इबलीस अपने बुरे अन्जाम को अच्छी तरह जानता है अब जो ख़ुद यह यक़ीन रखता हो कि मुझे अज़ाब में पकड़ा जाना है उसे ख़ुदा का बराबर ठहराना कितनी बड़ी बेवक़ूफ़ी है।

وَ اِنْ كَانُوْا لَيَقُوْلُوْنَ ﴿١٦٧﴾ لَوْ اَنَّ عِنْدَنَا ذِكْرًا مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٦٨﴾ لَكُنَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٦٩﴾ فَكَفَرُوْا بِهٖ فَسَوْفَ
يَعْلَمُوْنَ ﴿١٧٠﴾ وَ لَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٧١﴾ اِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُوْرُوْنَ ﴿١٧٢﴾ وَ اِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ
الْغٰلِبُوْنَ ﴿١٧٣﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿١٧٤﴾ وَّ اَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ﴿١٧٥﴾ اَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿١٧٦﴾ فَاِذَا نَزَلَ
بِسَاحَتِهِمْ فَسَآءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿١٧٧﴾ وَ تَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿١٧٨﴾ وَّ اَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ﴿١٧٩﴾ سُبْحٰنَ رَبِّكَ
رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٨٠﴾ وَ سَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٨١﴾ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٨٢﴾

आयत नं० 167 से 182

और ये लोग (यानी अरब के काफ़िर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आने से पहले) **कहा करते थे**(167) **कि अगर हमारे पास कोई नसीहत** (की किताब) **पहले लोगों** (की किताबों) **की तरह आती** (यानी जैसे यहूदियों और ईसाइयों के पास पैग़म्बर और किताबें आईं)(168) **तो** (अगर हमारे लिए ऐसा होता तो) **हम अल्लाह के ख़ास बन्दे होते** (यानी उस किताब की तस्दीक़ और उस पर अमल करते, उनकी तरह न झुटलाते और न मुख़ालफ़त करते)(169) **फिर** (जब वो नसीहत की किताब पैग़म्बर के वास्ते से उनको पहुंची तो) **ये लोग उस का इनकार करने लगे** (और अपना वो वादा तोड़ दिया) **तो** (अच्छा) **अब उनको** (इस का अन्जाम) **मालूम हुआ जाता है** (जैसा कि मरते ही कुफ़्र का अन्जाम सामने आ गया और कुछ सज़ाएं मौत से पहले भी मिल गईं)(170) **और** (आगे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तसल्ली है कि चाहे इस वक़्त इन मुख़ालिफ़ों को कुछ ताक़त हासिल है लेकिन यह कुछ दिनों की बात है, क्योंकि) **हमारे ख़ास बन्दों यानी पैग़म्बरों के लिए यह बात पहले ही से तय हो चुकी** (है यानी तक़दीर की किताब में लिखी जा चुकी) **है**(171) **कि उन की मदद की जाएगी**(172) **और** (हमारा तो दस्तूर यह है कि) **हमारा गिरोह कामयाब रहता है**(173) **तो आप** (तसल्ली रखिए और) **थोड़े दिनों तक** (सब्र कीजिए और) **उन** (की मुख़ालफ़त और सताने) **का ध्यान न कीजिए**(174) **और** (ज़रा) **उनको देखते रहिए** (यानी उनकी हालत का ज़रा इन्तिज़ार कीजिए) **सो जल्दी ही ये भी** (अपना अन्जाम) **देख लेंगे**(175) (इस अज़ाब की धमकी पर वो कह सकते थे और अक्सर वो कहा भी करते थे कि ऐसा कब होगा तो इसके जवाब में फ़रमाते हैं कि)

क्या हमारे अज़ाब का तक़ाज़ा कर रहे हैं(176) **सो वो** (अज़ाब) **जब उनके सामने आ उतरेगा तो वो दिन उन लोगों का जिन को** (पहले से) **डराया जा चुका था बहुत बुरा होगा** (कि वो अज़ाब टल न सकेगा)(177) **और** (जब यह बात है कि उन लोगों पर अज़ाब पड़ने वाला है तो) **आप** (तसल्ली रखिए और) **थोड़े ज़माने तक** (सब्र कीजिए और) **उन** (की मुख़ालफ़त और सताने) **का ध्यान न कीजिए**(178) **और** (ज़रा उन की हालत को) **देखते रहिए** (यानी इन्तिज़ार कीजिए) **सो जल्दी ही ये भी देख लेंगे** (यानी आप को तो हमारे कहने से यक़ीन है ही, आंखों से देख कर इन्हें भी यक़ीन आजाएगा)(179) **आप का रब जो बड़ी इज़्ज़त वाला है उन बातों से पाक है जो ये** (काफ़िर) **बयान करते हैं** (बस अल्लाह को उन बातों से पाक ही ठहराओ)(180) **और** (पैग़म्बरों का कहना मानना ज़रूरी समझो क्योंकि हम उनकी शान में यह कहते हैं कि) **सलाम हो पैग़म्बरों पर**(181) **और** (अल्लाह को शिर्क वग़ैरह से पाक समझने के साथ-साथ सारी ख़ूबियों वाला भी समझो, क्योंकि) **सारी ख़ूबियां अल्लाह ही के लिए हैं जो सारे जहानों का रब** (और मालिक) **है**(182)।

नोटः- हज़रत अबू सईद रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कई बार सुना कि आप नमाज़ ख़त्म होने के बाद ये आयतें तिलावत किया करते थे- ''सुबहाना रब्बिका......... यानी सूरत साफ़्फ़ात की आख़री तीन आयतें ।

हज़रत अली रज़ि० का बयान है कि ''जो आदमी यह चाहता हो कि क़ियामत के दिन उसे भरपूर पैमाने से सवाब मिले उसे चाहिए कि अपनी हर मजलिस के आख़ीर में ये पढ़े सुबहान् रब्बिका.......... यानी सूरत साफ़्फ़ात की ये आख़री तीन आयतें।

(तफ़सीर इब्ने कसीर)

38-सूरत-साद

इस मक्की सूरत में '5' रूकू और '88' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

صٓ وَ الْقُرْاٰنِ ذِی الذِّکْرِ ۝١ بَلِ الَّذِیْنَ کَفَرُوْا فِیْ عِزَّةٍ وَّ شِقَاقٍ ۝٢ کَمْ اَهْلَکْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ فَنَادَوْا وَّ
لَاتَ حِیْنَ مَنَاصٍ ۝٣ وَ عَجِبُوْۤا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ ۫ وَ قَالَ الْکٰفِرُوْنَ هٰذَا سٰحِرٌ کَذَّابٌ ۝٤ اَجَعَلَ
الْاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ اِنَّ هٰذَا لَشَیْءٌ عُجَابٌ ۝٥ وَ انْطَلَقَ الْمَلَاُ مِنْهُمْ اَنِ امْشُوْا وَ اصْبِرُوْا عَلٰۤی اٰلِهَتِکُمْ ۚ اِنَّ
هٰذَا لَشَیْءٌ یُّرَادُ ۝٦ مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِی الْمِلَّةِ الْاٰخِرَةِ ۚ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا اخْتِلَاقٌ ۝٧ ءَاُنْزِلَ عَلَیْهِ الذِّکْرُ مِنْۢ بَیْنِنَا ؕ
بَلْ هُمْ فِیْ شَکٍّ مِّنْ ذِکْرِیْ ۚ بَلْ لَّمَّا یَذُوْقُوْا عَذَابِ ۝٨ اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَآئِنُ رَحْمَةِ رَبِّکَ الْعَزِیْزِ
الْوَهَّابِ ۝٩ اَمْ لَهُمْ مُّلْکُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَا بَیْنَهُمَا ۟ فَلْیَرْتَقُوْا فِی الْاَسْبَابِ ۝١٠ جُنْدٌ مَّا هُنَالِکَ مَهْزُوْمٌ
مِّنَ الْاَحْزَابِ ۝١١ کَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّ عَادٌ وَّ فِرْعَوْنُ ذُو الْاَوْتَادِ ۝١٢ وَ ثَمُوْدُ وَ قَوْمُ لُوْطٍ وَّ اَصْحٰبُ
لْـَٔیْکَةِ ؕ اُولٰٓئِکَ الْاَحْزَابُ ۝١٣ اِنْ کُلٌّ اِلَّا کَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ۝١٤ وَ مَا یَنْظُرُ هٰۤؤُلَآءِ اِلَّا صَیْحَةً وَّاحِدَةً مَّا
لَهَا مِنْ فَوَاقٍ ۝١٥ وَ قَالُوْا رَبَّنَا عَجِّلْ لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ یَوْمِ الْحِسَابِ ۝١٦

आयत नं० 01 से 16

साद (इस का मतलब तो अल्लाह को मालूम है) **कसम है नसीहत भरे कुरआन की** (कि काफ़िर लोग आप की पैग़म्बरी का इनकार करते हुए जो कुछ कह रहे हैं वो ठीक नहीं)**(01) बल्कि** (ख़ुद) **ये काफ़िर** (ही) **बड़ाई के घमन्ड और** (हक़ की) **मुख़ालफ़त में** (पड़े) **हैं(02)** (और हटधर्मी और मुख़ालफ़त का अज़ाब एक दिन उन पर पड़ने वाला है जैसा कि) **इन से पहले बहुत सी उम्मतों को हम** (अज़ाब से) **हलाक कर चुके हैं सो उन्होंने** (तबाही के वक़्त) **बड़ी हाय पुकार की** (और बहुत शोर गुल मचाया) **और** (उस वक़्त शोर गुल करने से क्या होता है क्योंकि) **वो वक़्त छुटकारे का न था** (इसलिए कि जब अज़ाब आ चुके तो तौबा भी कुबूल नहीं होती)**(03) और इन** (कुरैशी)

काफ़िरों ने इस बात पर अचम्भा किया कि उनके पास उन (ही) **में से** (यानी जो कि उनकी तरह इन्सान है) **एक** (पैग़म्बर) **ख़बरदार करने वाला आ गया** (अचम्भे की वजह यह थी कि वो लोग अपनी जहालत की वजह से इन्सान को पैग़म्बरी के लाइक़ नहीं समझते थे)**, और** (इस पैग़म्बरी के इनकार में यहां तक पहुंच गये कि) **कहने लगे कि** (नऊज़ुबिल्लाह) **यह आदमी** (मोजिज़े के बारे में) **जादूगर** (और पैग़म्बरी के दावे में) **झूटा है(04)** (और) **क्या** (यह आदमी सच्चा हो सकता है जब कि) **उसने इतने माबूदों की जगह एक ही माबूद रहने दिया** (और सब के माबूद होने का इनकार कर दिया) **सचमुच यह बहुत ही अजीब बात है(05) और** (तौहीद की बातें सुन कर) **इन काफ़िरों के सरदार** (पंचायत से उठकर लोगों से) **यह कहते हुए चले कि** (यहां से) **चलो और अपने माबूदों** (की इबादत) **पर जमे रहो** (क्योंकि एक तो) **यह** (तौहीद की दावत) **कोई मतलब की बात** (लगती है यानी इस बहाने से आप को हुकूमत की चाहत) **है(06)** (दूसरे तौहीद का दावा भी ग़लत और अजीब है क्योंकि) **हम ने तो यह** (तौहीद की) **बात** (अपने) **पहले मज़हब में नहीं सुनी, हो न हो यह** (इस आदमी की) **मन घड़त** (बात) **है(07) क्या हम सब में इसी आदमी** (में कोई ख़ास बात थी कि इसी को पैग़म्बरी मिली और इसी) **पर किताब उतारी गई** (बल्कि किसी सरदार पर उतारी जाती तो हरज न था, आगे अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि अगर किसी और पर उतारी जाती तो ऐसा नहीं कि उसका कहा मान लेते)**, बल्कि** (असल बात यह है कि) **ये लोग** (ख़ुद) **मेरी वही की तरफ़ से शक** (यानी इनकार) **में हैं** (यानी पैग़म्बरी ही का इनकार करते हैं ख़ास कर इन्सान को नबी मानने के लिए तैयार नहीं, और यह इनकार भी इसलिए नहीं कि इन के पास कोई दलील है) **बल्कि** (इसकी असल वजह यह है कि) **उन्होंने अभी तक मेरे अज़ाब का मज़ा नहीं चक्खा** (वर्ना सब अक़्ल ठिकाने आजाती)**(08) क्या इन लोगों के पास आप के रब की रहमत के ख़ज़ाने हैं जो बड़ा ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाला और) **बहुत देने वाला है** (कि ये जिसको चाहें पैग़म्बरी दें जिसको चाहे न दें और जब इन्होंने पैग़म्बरी नहीं दी तो पैग़म्बर कैसे हो गया)**(09) या** (अगर सारे ख़ज़ाने क़ब्ज़े में नहीं हैं तो) **क्या आसमान और ज़मीन और जो चीज़ें उनके बीच में हैं वो** (सब) **इनके क़ब्ज़े में हैं** (कि जिसे चाहें उसे पैग़म्बरी मिलनी चाहिए अगर ऐसा है) **तो इन को चाहिए कि सीढ़ियां लगा कर** (आसमान पर) **चढ़ जाएं** (और ये ऐसा कर नहीं सकते तो जब इतना भी इनके बस में नहीं तो आसमान और ज़मीन की बातों पर उन का क्या बस चलेगा)**(10) इस जगह पर** (यानी मक्का में) **यह** (पैग़म्बर के ख़िलाफ़ लोगों का) **एक गिरोह है जो** (जल्दी ही) **मात खाजाएगा** (जैसा कि जंगे बद्र में यह ख़बर पूरी हुई)**(11) इन से पहले भी क़ौमे नूह ने और आद ने और**

फ़िरऔन ने जिस (की हुकूमत) **के खून्टे गड़े थे** (पैग़म्बरों को) **झुटलाया था**(12) **और समूद ने और क़ौमे लूत ने और ऐका वालों ने** (भी झुटलाया था, और) **वो गिरोह ये ही** (मुख़ालिफ़) **लोग हैं**(13) **उन सब ने पैग़म्बरों को झुटलाया था** (जैसे ये कुरैशी काफ़िर आप को झुटला रहे हैं) **इसलिए मेरा अज़ाब** (उन पर) **आकर रहा** (बस जब जुर्म एक सा है तो वैसे ही अज़ाब से क्यों बेफ़िक्र हैं)(14) **और ये लोग** (जो झुटलाए जाते हैं तो) **बस एक ज़ोर की आवाज़** (यानी क़ियामत का दूसरा सूर फूंके जाने) **के इन्तिज़ार में हैं जो बीच में रूकने का नाम न ले** (यानी लगातार हो)(15) **और ये लोग** (क़ियामत की ख़बर सुन कर पैग़म्बर को झुटलाते हुए और हंसी उड़ाते हुए) **कहते हैं कि हमारे रब** (आख़रत में जो काफ़िरों को अज़ाब होगा उसमें से) **हमारा हिस्सा हम को हिसाब के दिन से पहले ही देदे** (मतलब यह कि क़ियामत नहीं है और अगर है तो हम को अभी अज़ाब देदे जब अज़ाब नहीं होता तो पता चला कि क़ियामत न आएगी नऊज़ुबिल्लाह)(16)

اِصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوٗدَ ذَا الْاَيْدِ ۚ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌ ﴿١٧﴾ اِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهٗ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَ
الْاِشْرَاقِ ﴿١٨﴾ وَالطَّيْرَ مَحْشُوْرَةً ؕ كُلٌّ لَّهٗۤ اَوَّابٌ ﴿١٩﴾ وَشَدَدْنَا مُلْكَهٗ وَاٰتَيْنٰهُ الْحِكْمَةَ وَفَصْلَ الْخِطَابِ ﴿٢٠﴾

आयत नं० 17 से 20

(ऐ पैग़म्बर) **आप इन लोगों की बातों पर सब्र कीजिए और हमारे बन्दे दाऊद को याद कीजिए जो** (इबादत में जिसमें सब्र भी दाख़िल है) **बड़ी ताक़त वाले** (और हिम्मत वाले) **थे वो बेशक अल्लाह से बहुत लौ लगाने वाले थे**(17) (और हम ने उन को ये नेमतें दी थी एक यह कि) **हम ने पहाड़ों को हुक्म कर रक्खा था कि उनके साथ** (शामिल होकर) **शाम और सुबह तस्बीह किया करें** (कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के तस्बीह के ये वक़्त थे)(18) **और** (इसी तरह) **परिन्दों को भी** (ये ही हुक्म दे रक्खा था) **जो कि** (तस्बीह के वक़्त उन के पास) **जमा हो जाते थे,** (और पहाड़ और परिन्दे वग़ैरह) **सब** (उनके साथ मिल कर) **अल्लाह का ख़ूब ज़िक्र करते**(19) **और** (दूसरी नेमत यह कि) **हम ने उन की हुकूमत को बहुत ताक़त दी थी और** (तीसरी नेमत यह कि) **हम ने उन को हिकमत** (यानी पैग़म्बरी) **और फ़ैसला कर देने वाली बात का सलीक़ा दिया था**(20)।

नोटः- एक हदीस में है कि "अल्लाह तआला के नज़दीक सबसे ज़्यादा पसन्दीदा नमाज़ दाऊद

(अलैहिस्सलाम) की है और सब से ज़्यादा पसन्दीदा रोज़ा दाऊद (अलैहिस्सलाम) का है वो आधी रात सोते एक तिहाई रात इबादत करते और फिर रात के छटे हिस्से में सो जाते थे। और एक दिन रोज़ा रखते और एक दिन न रखते थे जब दुशमन से उनका मुक़ाबिला हो जाता तो मैदान न छोड़ते थे और बेशक अल्लाह की तरफ़ बहुत लौ लगाने वाले थे''। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

وَهَلْ اَتٰىكَ نَبَؤُا الْخَصْمِ ۘ اِذْ تَسَوَّرُوا الْمِحْرَابَ ﴿٢١﴾ اِذْ دَخَلُوْا عَلٰى دَاوٗدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ قَالُوْا لَا تَخَفْ ۚ خَصْمٰنِ
بَغٰى بَعْضُنَا عَلٰى بَعْضٍ فَاحْكُمْ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَاۤ اِلٰى سَوَآءِ الصِّرَاطِ ﴿٢٢﴾ اِنَّ هٰذَاۤ اَخِيْ ۫ لَهٗ تِسْعٌ وَّ
تِسْعُوْنَ نَعْجَةً وَّلِيَ نَعْجَةٌ وَّاحِدَةٌ ۫ فَقَالَ اَكْفِلْنِيْهَا وَعَزَّنِيْ فِي الْخِطَابِ ﴿٢٣﴾ قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ
اِلٰى نِعَاجِهٖ ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْخُلَطَآءِ لَيَبْغِيْ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَقَلِيْلٌ مَّا
هُمْ ؕ وَظَنَّ دَاوٗدُ اَنَّمَا فَتَنّٰهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهٗ وَخَرَّ رَاكِعًا وَّاَنَابَ ۩ ﴿٢٤﴾ فَغَفَرْنَا لَهٗ ذٰلِكَ ؕ وَاِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَ
حُسْنَ مَاٰبٍ ﴿٢٥﴾ يٰدَاوٗدُ اِنَّا جَعَلْنٰكَ خَلِيْفَةً فِي الْاَرْضِ فَاحْكُمْ بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوٰى فَيُضِلَّكَ
عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَضِلُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌۢ بِمَا نَسُوْا يَوْمَ الْحِسَابِ ﴿٢٦﴾

आयत नं० 21 से 26

और क्या आप को उन के मुक़दमे वालों की ख़बर भी पहुंची है (जो दाऊद अलैहिस्सलाम के पास मुक़दमा लाए), **जब कि वो लोग** (दाऊद अलैहिस्सलाम की) **इबादत गाह की दीवार कूद कर अन्दर घुस आए** (क्योंकि दरवाज़े से पहरेदारो ने इसलिए नहीं आने दिया कि वो वक़्त आप की इबादत का था मुक़दमों के फ़ैसले का नहीं)(21) **जब वो दाऊद** (अलैहिस्सलाम) **के पास आए तो दाऊद** (अलैहिस्सलाम) **उन** (के इस तरह आने) **से घबरा गये** (कि कहीं ये लोग दुशमन न हों जो क़त्ल के इरादे से इस तरह अकेले में आ घुसे हों) **वो लोग कहने लगे कि आप डरें नहीं हम** (झगड़े के) **दो फ़रीक़ हैं कि एक ने दूसरे पर** (कुछ) **ज़्यादती की है** (उसके फ़ैसले के लिए हम आए हैं चूंकि पहरेदारों ने दरवाज़े से नहीं आने दिया इसलिए इस तरह आने की ग़लती की) **सो हमारे बीच में इन्साफ़ से फ़ैसला कर दीजिए और बेइन्साफ़ी न कीजिए और हम को** (मुआमले की) **सीधी राह बता दीजिए**(22) (और फिर एक आदमी बोला कि मुक़दमे की सूरत यह है कि) **यह आदमी मेरा** (दीनी) **भाई है** (और) **इसके पास निन्नियानवे** (99) **दुम्बियां हैं और मेरे पास** (कुल)

एक दुम्बी है, अब यह कहता है कि वो भी मुझ को देदो और बात चीत में मुझ को दबाता (है और मेरी बात को मुंह ज़ोरी से चलने नहीं देता) **है(23) दाऊद** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा यह जो तेरी दुम्बी अपनी दुम्बियों में मिलाने को मांगता है तो सचमुच तुझ पर ज़ुल्म करता है, और अक्सर साझी** (लोगों की आदत है कि) **एक दूसरे पर** (यूंही) **ज़्यादती किया करते हैं सिवाए उनके जो ईमान वाले हैं और नेक काम करते हैं और ऐसे लोग बहुत ही कम हैं** (और यह बात आपने उसकी तसल्ली के लिए कही जिस पर ज़्यादती हो रही थी), **और दाऊद** (अलैहिस्सलाम) **को ध्यान आया कि** (इस मुक़दमे को इस तरह पेश करके) **हम ने उन को आज़माया है इसलिए उन्होंने अपने रब के सामने तौबा की और सजदे में गिर गये और** (अल्लाह से) **लौ लगाई(24) सो हम ने उन को उस** (बात) **में मुआफ़ कर दिया, और हमारे यहां उनके लिए** (ख़ास) **नज़दीकी और** (ऊंचे दर्जे की) **नेक अन्जामी** (यानी जन्नत का ऊंचा दर्जा) **है(25) ऐ दाऊद हम ने तुम को ज़मीन पर हाकिम बनाया है इसलिए** (जिस तरह अब तक करते रहे इसी तरह आगे भी) **लोगों में इन्साफ़ के साथ फ़ैसला करते रहना और** (जिस तरह अब तक कभी मनमर्ज़ी पर नहीं चले इसी तरह आगे भी) **मन मर्ज़ी पर मत चलना कि** (अगर ऐसा करोगे तो) **वो अल्लाह के रास्ते से तुम को भटका देगी,** (और) **जो लोग अल्लाह के रास्ते से भटकते हैं उन के लिए सख़्त अज़ाब होगा इस वजह से कि वो हिसाब के दिन को भूले रहे(26)**

नोटः- इस क़िस्से में दाऊद अलैहिस्सलाम का क्या इम्तिहान लिया गया यह बात न क़ुरआन में साफ़ की गई न हदीस में इसलिए इस बारे में अपनी तरफ़ से कुछ कहना ठीक नहीं बस इतना समझ लेना काफ़ी है कि वो हर घड़ी तौबा करने वाले और अल्लाह से लौ लगाने वाले थे।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا بَاطِلًا ؕ ذٰلِكَ ظَنُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنَ النَّارِ ؕ ﴿٢٧﴾
اَمْ نَجْعَلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَالْمُفْسِدِيْنَ فِى الْاَرْضِ ۫ اَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِيْنَ كَالْفُجَّارِ ﴿٢٨﴾ كِتٰبٌ
اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ مُبٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوْٓا اٰيٰتِهٖ وَلِيَتَذَكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٢٩﴾

आयत नं० 27 से 29

और हम ने आसमान और ज़मीन को और जो चीज़ें उनके बीच में मौजूद हैं उन को

बेकार ही पैदा नहीं किया (बल्कि बहुत सी हिकमतें और भेद छुपे हैं जिन में सब से बड़ी हिकमत यह है कि इन से तौहीद और आख़रत साबित होती है), **यह** (यानी इनको हिकमत से ख़ाली समझना) **उन लोगों की सोच है जो काफ़िर हैं** (क्योंकि जब तौहीद और आख़रत के अन्जाम का इनकार किया तो दुनिया की पैदाइश की सब से बड़ी हिकमत का इनकार कर दिया) **सो काफ़िरों के लिए** (आख़रत में) **बड़ी ख़राबी है यानी दोज़ख़** (क्योंकि वो तौहीद का इनकार करते थे)(27) **हां** (एक ग़लती उनकी यह है कि क़ियामत का इनकार करते हैं जब कि क़ियामत में यह हिकमत है कि नेकों को इनआम और फ़सादियों को सज़ा मिले उनके इनकार का मतलब यह है कि सब बराबर रहें) **तो क्या हम उन लोगों को जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये उन की बराबर कर दें जो** (कुफ़्र वग़ैरह करके) **दुनिया में फ़साद करते फिरते हैं, या** (यह कि) **हम परहेज़गारों को बदकारों की बराबर कर देंगे** (यानी ऐसा नहीं हो सकता इसलिए क़ियामत ज़रूर आएगी ताकि नेकों को इनआम और बदकारों को सज़ा मिले इसी तरह तौहीद व आख़रत के साथ पैग़म्बरी पर ईमान रखना भी ज़रूरी है)(28) **यह** (क़ुरआन) **एक बरकत वाली किताब है जिसको हम ने आप पर इसलिए उतारा है ताकि लोग इसकी आयतों में सोचें और ताकि** (सोच कर इसकी सच्चाई मालूम करके इससे) **समझ रखने वाले नसीहत हासिल** (करें इस पर अमल) **करें**(29)।

नोटः- नेकों और बुरों का बराबर न होना आख़रत के हिसाब से है दुनिया में अच्छों और बुरों के इन्सानी हक़ों का बराबर होना अलग बात है।

وَوَهَبْنَا لِدَاوُدَ سُلَيْمٰنَ ۚ نِعْمَ الْعَبْدُ ۚ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌ ﴿٣٠﴾ اِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصّٰفِنٰتُ الْجِيَادُ ﴿٣١﴾ فَقَالَ اِنِّيْۤ
اَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّيْ ۚ حَتّٰى تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ﴿٣٢﴾ رُدُّوْهَا عَلَيَّ ۚ فَطَفِقَ مَسْحًۢا بِالسُّوْقِ وَالْاَعْنَاقِ ﴿٣٣﴾

आयत नं० 30 से 33

और हम ने दाऊद (अलैहिस्सलाम) **को सुलेमान** (अलैहिस्सलाम जैसा बेटा) **दिया,** (वो) **बहुत अच्छे बन्दे थे कि** (अल्लाह की तरफ़) **बहुत लौ लगाने वाले थे**(30) (उनका वो क़िस्सा याद कीजिए) **जब कि शाम के वक़्त उनके सामने अच्छी नस्ल के घोड़े लाए गये** (जो जिहाद के लिए रक्खे जाते थे उनके मुआएने में इतनी देर हो गई कि दिन छुप गया और कोई इबादत छुट गई और रौब की वजह से कोई ख़ादिम भी याद न दिला सका)(31) **तो** (जब ध्यान आया तो) **कहने लगे कि**

(अफ़सोस) **मैं इस माल की मुहब्बत में** (लग कर) **अपने रब की याद भुला बैठा** (यानी नमाज़ छूट गई) **यहां तक कि सूरज** (पच्छिम के) **पर्दे में छुप गया(32)** (फिर ख़ादिमों को हुक्म दिया कि) **उन घोड़ों को ज़रा फिर तो मेरे सामने लाओ** (बस वो लाए गये) **तो उन्होंने उन** (घोड़ों) **की पिन्डलियों और गर्दनों पर** (तलवार से) **हाथ साफ़ करना शुरू किया** (यानी उन को ज़बह कर दिया)**(33)**

नोटः- उन घोड़ों के सुलेमान अलैहिस्सलाम मालिक थे और उन की शरीअत में गाय बकरी व ऊंट की तरह घोड़ों की कुर्बानी भी जाइज़ थी इसलिए उन्होंने इबादत छूटने की भूल को सुधारने के लिए उनको अल्लाह की राह में कुर्बान कर दिया। किसी नेकी की आदत डालने के लिए अपने नफ़्स पर ऐसी सज़ाएं ठहरा देना नफ़्स के सुधार का एक नुस्ख़ा है।

وَ لَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمٰنَ وَ اَلْقَيْنَا عَلٰى كُرْسِيِّهٖ جَسَدًا ثُمَّ اَنَابَ ﴿۳۴﴾ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِىْ وَهَبْ لِىْ مُلْكًا لَّا يَنْۢبَغِىْ لِاَحَدٍ
مِّنْۢ بَعْدِىْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿۳۵﴾ فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيْحَ تَجْرِىْ بِاَمْرِهٖ رُخَآءً حَيْثُ اَصَابَ ﴿۳۶﴾ وَ الشَّيٰطِيْنَ كُلَّ بَنَّآءٍ
وَّ غَوَّاصٍ ﴿۳۷﴾ وَّ اٰخَرِيْنَ مُقَرَّنِيْنَ فِى الْاَصْفَادِ ﴿۳۸﴾ هٰذَا عَطَآؤُنَا فَامْنُنْ اَوْ اَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿۳۹﴾ وَ اِنَّ لَهٗ
عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَ حُسْنَ مَاٰبٍ ﴿۴۰﴾

आयत नं० 34 से 40

और हम ने सुलेमान (अलैहिस्सलाम) **को** (एक और तरह से भी) **आज़माया और हम ने उनकी कुर्सी पर एक धड़ लाकर डाल दिया फिर उन्होंने** (अल्लाह की तरफ़) **लौ लगाई(34)** (उन्होंने अल्लाह से) **दुआ मांगी कि या रब मेरे मेरा** (पहला) **कुसूर मुआफ़ कर दे और** (आगे के लिए) **मुझ को ऐसी हुकूमत दे कि मेरे सिवा** (मेरे ज़माने में) **किसी को हासिल न हो** (और) **आप बड़े देने वाले हैं** (आप को इस दुआ का कुबूल कर लेना कुछ मुश्किल नहीं)**(35) सो** (हम ने उनकी दुआ कुबूल की और उनकी ख़ता भी मुआफ़ कर दी और) **हम ने हवा को उन के ताबे कर दिया कि वो उनके हुक्म से जहां वो** (जाना) **चाहते नर्मी से चलती** (कि इससे घोड़ों की ज़रूरत न रही)(36) **और जिन्नात को भी उनके ताबे कर दिया यानी इमारत बनाने वालों को भी और** (मोती निकालने के लिए दरिया में) **डुबकी लगाने वालों को भी(37) और दूसरे जिन्नात को भी जो ज़ंजीरों में बन्धे रहते थे** (जो काम से जी चुराते होंगे उनके लिए यह सज़ा होगी)(38) **यह**

(सामान देकर उन से कहा गया कि यह) **हमारा इनआम है सो चाहे** (किसी को) **दो या न दो तुम से कुछ हिसाब न लिया जाएगा** (यानी जितना समान तुम को दिया गया है तुम को मालिक बना दिया है दूसरे बादशाहों की तरह सिर्फ़ देखभाल व इन्तिज़ाम की ज़िम्मेदारी नहीं)(39) **और** (सिर्फ़ यह ही नहीं) **उनके लिए हमारे यहां** (ख़ास) **नज़्दीकी और** (ऊंचे दर्जे की) **नेक अन्जामी है** (जिसका फल आख़रत में दिखाई देगा)(40)।

नोटः- वो धड़ क्या था और वो इम्तिहान कैसा था यह राज़ के पर्दे में है बस इतना जानना काफ़ी है कि वो हर इम्तिहान में अल्लाह से लौ लगाने वाले थे।

وَاذْكُرْ عَبْدَنَآ اَيُّوْبَ ۘ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ اَنِّیْ مَسَّنِیَ الشَّيْطٰنُ بِنُصْبٍ وَّعَذَابٍ ﴿٤١﴾ اُرْكُضْ بِرِجْلِكَ ۚ هٰذَا مُغْتَسَلٌۢ
بَارِدٌ وَّشَرَابٌ ﴿٤٢﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنَّا وَذِكْرٰى لِاُولِى الْاَلْبَابِ ﴿٤٣﴾ وَخُذْ بِيَدِكَ
ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّهٖ وَلَا تَحْنَثْ ؕ اِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًا ؕ نِعْمَ الْعَبْدُ ؕ اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ ﴿٤٤﴾

आयत नं० 41 से 44

और आप हमारे बन्दे अय्यूब (अलैहिस्सलाम) **को याद कीजिए, जब कि उन्होंने अपने रब को पुकारा कि शैतान ने मुझको दुख और तकलीफ़ पहुंचाई** (है रिवायत में है कि हज़रत अय्यूब की बीमारी के ज़माने में एक बार शैतान एक हकीम की सूरत में हज़रत की बीवी को मिला उनके इलाज के लिए उसने कहा कि इनको सेहत हो जाए तो यह कह देना कि तूने इनको शिफ़ा दी यानी अच्छा कर दिया मैं और कुछ इनआम नहीं चाहता। उन्होंने अय्यूब अलैहिस्सलाम से बताया हज़रत ने फ़रमाया कि भली मानस वो तो शैतान था। मैं एहद करता हूं कि अगर अल्लाह तआला ने मुझ को शिफ़ा देदी तो मैं तुझ को सौ क़मचियां मारूंगा मेरी बीमारी से शैतान की इतनी हिम्मत हो गई कि मेरी बीवी से ऐसी बात कहलवाना चाहता है जो शिर्क जैसी) **है**(41) (बस इस बात का उनको बहुत दुख हुआ और उन्होंने और ज़्यादा गिड़गिड़ाकर दुआ की तो उनकी दुआ क़ुबूल कर ली और हुक्म दिया कि) **अपना पैर** (ज़मीन पर) **मारो** (बस उन्होंने ज़मीन पर पैर मारा तो वहां से पानी निकल कर बहने लगा बस हमने उन से कहा) **यह** (तुम्हारे लिए) **ठन्डा पानी है नहाने के लिए** (भी) **और पीने के लिए** (भी यानी इसमें नहाओ और पियो बस नहाए और पिया भी और बिल्कुल अच्छे हो गये)(42) **और हमने उनको उनके घर वाले दे दिये और उनके साथ** (गिनती में) **उतने ही और भी**

(दिये) **अपनी ख़ास रहमत की वजह से और समझदारों के लिए यादगार बनाने के वास्ते** (यानी समझदार याद रक्खें कि अल्लाह तआ़ला सब्र करने वालों को कैसा बदला देते हैं)(43) **और** (अब अय्यूब अलैहिस्सलाम ने अपनी क़सम पूरी करने का इरादा किया मगर चूंकि उनकी बीवी ने उनकी ख़िदमत बहुत की थी और उन्होंने कोई गुनाह भी नहीं किया था इसलिए अल्लाह तआ़ला ने अपनी रहमत से उनके लिए कमी कर दी और फ़रमाया कि ऐ अय्यूब) **तुम अपने हाथ में एक मुट्ठा सींकों का लो** (जिसमें सौ सींके हों) **और** (अपनी बीवी को) **उससे मार लो और** (अपनी) **क़सम न तोड़ो** (जैसा कि ऐसा ही हुआ, आगे अय्यूब अलैहिस्सलाम की तारीफ़ है कि) **बेशक हम ने उन को** (बड़ा) **सब्र करने वाला पाया, अच्छे बन्दे थे, कि** (अल्लाह की तरफ़) **बहुत लौ लगाने वाले थे(44)।**

नोटः- एक हदीस में है कि "जो आदमी एक क़सम खा ले फिर बाद में उसकी राय यह हो कि इस क़सम के ख़िलाफ़ करना ज़्यादा बेहतर है तो उसे चाहिए कि वो ही काम करे जो बेहतर हो और अपनी क़सम का कफ़्फ़ारा अदा करे"। (मआ़रिफ़ुल क़ुरआन)

وَ اذْكُرْ عِبٰدَنَآ اِبْرٰهِيْمَ وَ اِسْحٰقَ وَ يَعْقُوْبَ اُولِي الْاَيْدِيْ وَ الْاَبْصَارِ ۝٤٥ اِنَّآ اَخْلَصْنٰهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى
الدَّارِ ۝٤٦ وَ اِنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْاَخْيَارِ ۝٤٧ وَ اذْكُرْ اِسْمٰعِيْلَ وَ الْيَسَعَ وَ ذَا الْكِفْلِ ؕ وَ كُلٌّ مِّنَ
الْاَخْيَارِ ۝٤٨ هٰذَا ذِكْرٌ ؕ وَ اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ لَحُسْنَ مَاٰبٍ ۝٤٩ جَنّٰتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْاَبْوَابُ ۝٥٠ مُتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا
يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ وَّ شَرَابٍ ۝٥١ وَ عِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ اَتْرَابٌ ۝٥٢ هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِيَوْمِ
الْحِسَابِ ۝٥٣ اِنَّ هٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهٗ مِنْ نَّفَادٍ ۝٥٤ هٰذَا ؕ وَ اِنَّ لِلطّٰغِيْنَ لَشَرَّ مَاٰبٍ ۝٥٥ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ فَبِئْسَ
الْمِهَادُ ۝٥٦ هٰذَا ۙ فَلْيَذُوْقُوْهُ حَمِيْمٌ وَّ غَسَّاقٌ ۝٥٧ وَّ اٰخَرُ مِنْ شَكْلِهٖۤ اَزْوَاجٌ ۝٥٨ هٰذَا فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَّعَكُمْ ۚ لَا مَرْحَبًۢا
بِهِمْ ؕ اِنَّهُمْ صَالُوا النَّارِ ۝٥٩ قَالُوْا بَلْ اَنْتُمْ ۟ لَا مَرْحَبًۢا بِكُمْ ؕ اَنْتُمْ قَدَّمْتُمُوْهُ لَنَا ۚ فَبِئْسَ الْقَرَارُ ۝٦٠ قَالُوْا
رَبَّنَا مَنْ قَدَّمَ لَنَا هٰذَا فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا فِي النَّارِ ۝٦١ وَ قَالُوْا مَا لَنَا لَا نَرٰى رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُمْ مِّنَ
الْاَشْرَارِ ۝٦٢ اَتَّخَذْنٰهُمْ سِخْرِيًّا اَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ الْاَبْصَارُ ۝٦٣ اِنَّ ذٰلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ اَهْلِ النَّارِ ۝٦٤

आयत नं० 45 से 64

और हमारे बन्दों इब्राहीम और इसहाक़ और याकूब (अलैहिमुस्सलाम) **को याद कीजिए जो हाथों** (से नेक काम करने) **वाले और आंखों** (से देखने वाले यानी दीन की बातों में सोच विचार करने) **वाले थे**(45) (और) **हमने उनको एक ख़ास बात के लिए चुन लिया था कि वो आख़रत** (के घर) **की याद है**(46) **और वो** (हज़रात) **हमारे यहां चुने हुए और सबसे अच्छे लोगों में से हैं**(47) **और इस्माईल और अलयसा और ज़ुलकिफ़्ल को भी याद कीजिए, और ये सब भी सबसे अच्छे लोगों में से हैं**(48) **एक नसीहत की बात तो यह हो चुकी** (इससे मुराद पैग़म्बरों के क़िस्से हैं कि उनमें काफ़िरों के लिए दीन की तबलीग़ और मोमिनों के लिए नेक कामों की तालीम है), **और** (दूसरी बात आख़रत के अन्जाम के बारे में है कि) **परहेज़गारों के लिए** (आख़रत में) **अच्छा ठिकाना है**(49) **यानी सदा रहने की जन्नतें जिनके दरवाज़े उनके लिए** (पहले ही से) **खुले हुए होंगे**(50) **वो उन जन्नतों में तकिया लगाए बैठे होंगे** (और) **वहां** (जन्नत के ख़ादिमों से) **बहुत से फल और पीने की चीज़ें मंगवाएंगे**(51) **और उनके पास नीची निगाह वाली हम उम्र औरतें** (यानी हूरें) **होंगी**(52) **यह** (जिस का ज़िक्र हुआ ऐ मुसलमानो) **वो** (नेमत) **है जिसका तुम से हिसाब का दिन आने पर वादा किया जाता है**(53) **बेशक यह हमारी नेमत है जो कभी ख़त्म होने वाली नहीं**(54) **यह बात तो हो चुकी** (जो परहेज़गारों के बारे में थी) **और** (आगे काफ़िरों के बारे में बयान है कि) **सरकशों के लिए** (यानी जो कुफ़्र सिखाने वाले थे उन के लिए) **बुरा ठिकाना है**(55) **यानी दोज़ख़ उसमें वो दाख़िल होंगे बस** (वो) **बहुत ही बुरी जगह है**(56) **यह खौलता हुआ पानी और मवाद** (मौजूद) **है वो उस का मज़ा चक्खेंगे**(57) **और भी इस क़िस्म की** (नागवार और दुख देने वाली) **तरह-तरह की चीज़ें** (मौजूद हैं उनको भी चक्खेंगे और जो उनके पीछे चलने वाले थे उनके लिए भी यानी बड़े और छोटे दोनों के लिए ये ही चीज़ें) **हैं**(58) **और** (पहले बड़े दोज़ख़ में जाएंगे और फिर पीछे चलने वाले आएंगे तो बड़े आपस में कहेंगे कि लो) **यह एक और गिरोह आ गया जो तुम्हारे साथ** (अज़ाब में साझी होने के लिए जहन्नम में) **घुस रहे हैं उन पर ख़ुदा की मार ये भी दोज़ख़ ही में आ रहे हैं**(59) **वो** (आने वाले अपने बड़ों से) **कहेंगे बल्कि तुम्हारे ही ऊपर ख़ुदा की मार** (क्योंकि) **तुम ही तो यह** (मुसीबत) **हमारे आगे लाए** (क्योंकि तुम ही ने हम को बहकाया था) **सो जहन्नम बहुत ही बुरा ठिकाना है**(60) (फिर ये पीछे चलने वाले अल्लाह से) **दुआ करेंगे कि या रब हमारे जो आदमी इस** (मुसीबत) **को हमारे आगे लाया हो उस को दोज़ख़ में दो गुना अज़ाब दीजिए**(61) **और वो लोग** (आपस में) **कहेंगे कि क्या बात**

है हम उन लोगों को (दोज़ख़ में) **नहीं देखते जिन को हम बुरे लोगों में गिना करते थे** (यानी मुसलमानों को बुरा और गिरा हुआ समझा करते थे वो क्यों दिखाई नहीं देते)(62) **क्या हम ने** (नाहक़) **मज़ाक़ उड़ाया था** (और वो इस क़ाबिल न थे और जहन्नम में नहीं आए) **या** (यह कि जहन्नम में मौजूद हैं मगर) **उन** (के देखने) **से हमारी आंखें चूक रही हैं** (मतलब यह कि अज़ाब के साथ एक और पछतावा होगा कि जिन लोगों को हम बुरा समझते थे वो अज़ाब से बच गये)(63) **यह बात यानी दोज़ख़ी लोगों का आपस में लड़न झगड़ना बिल्कुल सच्ची बात है** (कि ज़रूर होकर रहेगी)(64)।

नोटः- ऊपर आयत में जन्नती लोगों की हम उम्र औरतों का ज़िक्र किया गया है इससे मालूम हुआ कि रिशते में शौहर बीवी की उम्र का भी ध्यान रखना चाहिए क्योंकि इससे आपस में लगाव पैदा होता है और रिशता ज़्यादा ख़ुशगवार और टिकाऊ हो जाता है।

قُلْ اِنَّمَآ اَنَا مُنْذِرٌ ۖ وَّ مَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝٦٥ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيْزُ
الْغَفَّارُ ۝٦٦ قُلْ هُوَ نَبَؤٌا عَظِيْمٌ ۝٦٧ اَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُوْنَ ۝٦٨ مَا كَانَ لِيَ مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلَاِ الْاَعْلٰٓى اِذْ
يَخْتَصِمُوْنَ ۝٦٩ اِنْ يُّوْحٰٓى اِلَيَّ اِلَّآ اَنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٧٠ اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ
طِيْنٍ ۝٧١ فَاِذَا سَوَّيْتُهٗ وَ نَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِيْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ۝٧٢ فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ ۝٧٣ اِلَّآ
اِبْلِيْسَ ؕ اِسْتَكْبَرَ وَ كَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ۝٧٤ قَالَ يٰٓاِبْلِيْسُ مَا مَنَعَكَ اَنْ تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِيَدَيَّ ؕ اَسْتَكْبَرْتَ
اَمْ كُنْتَ مِنَ الْعَالِيْنَ ۝٧٥ قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ؕ خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّ خَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ۝٧٦ قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا
فَاِنَّكَ رَجِيْمٌ ۝٧٧ وَّ اِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِيْٓ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ ۝٧٨ قَالَ رَبِّ فَاَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ۝٧٩ قَالَ فَاِنَّكَ مِنَ
الْمُنْظَرِيْنَ ۝٨٠ اِلٰى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ ۝٨١ قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝٨٢ اِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ
الْمُخْلَصِيْنَ ۝٨٣ قَالَ فَالْحَقُّ ۡ وَالْحَقَّ اَقُوْلُ ۝٨٤ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَ مِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝٨٥ قُلْ مَآ
اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ وَّ مَآ اَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِيْنَ ۝٨٦ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝٨٧ وَ لَتَعْلَمُنَّ نَبَاَهٗ بَعْدَ حِيْنٍ ۝٨٨

आयत नं० 65 से 88

आप कह दीजिए कि (तुम जो पैग़म्बरी और तौहीद का इनकार करते हो तो तुम्हारा ही

नुक़सान है मेरा कुछ नुक़सान नहीं क्योंकि) **मैं तो** (तुम को सिर्फ़ अल्लाह के अज़ाब से) **डराने वाला** (पैग़म्बर) **हूं और सिवाए अल्लाह अकेले ज़ोर आवर के कोई इबादत के लाइक़ नहीं है**(65) **वो रब है आसमानों और ज़मीन का और उन चीज़ों का जो उनके बीच में हैं** (और वो) **ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाला और गुनाहों का) **बड़ा बख़्शने वाला है**(66) (ऐ पैग़म्बर) **आप कह दीजिए यह** (यानी अल्लाह तआ़ला का मुझ को तौहीद और शरीअत के हुक्मों को सिखाने के लिए पैग़म्बर बनाना) **एक बड़ी ख़बर है**(67) **जिस** (का तुम को बड़ा ध्यान करना चाहिए था मगर अफ़सोस कि उस) **से तुम** (बिल्कुल ही) **मुंह मोड़े हुए हो**(68) (आगे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैग़म्बरी साबित करने की एक दलील है वो यह कि) **मुझ को ऊपर की दुनिया** (यानी आसमानों की बहस व बातों) **की** (किसी वास्ते से) **कुछ ख़बर न थी जब कि वो** (आदम की पैदाइश के बारे में) **बात कर रहे थे** (अब मैं जो उस बात चीत का क़िस्सा सुनाता हूं तो सोचने की बात है कि मुझे यह क़िस्सा कहां से पता चला, मैंने अपनी आंख से तो उसे देखा नहीं किताब वालों से भी मेरा ऐसा मेल जोल नहीं जो उन से मालूम कर लेता, यक़ीन की बात है कि मुझे इल्म वही के वास्ते से ही हासिल हुआ है बस मेरी पैग़म्बरी साबित हो गई)(69) **मेरे पास** (जो) **वही** (आती है जिससे आसमानों की बातें भी मालूम होती हैं तो) **सिर्फ़ इस वजह से आती है कि मैं** (अल्लाह की तरफ़ से) **ख़बरदार करने वाला** (बनाकर भेजा गया हूं यानी चूंकि मुझ को पैग़म्बरी मिली है इसलिए वही आती है बस ज़रूरी है कि तुम तस्दीक़ करो कि मैं पैग़म्बर) **हूं**(70) (और आसमानों की वो बात जिस का ऊपर ज़िक्र हुआ है उस वक़्त हुई थी) **जब कि आप के रब ने फ़रिशतों से फ़रमाया कि मैं गारे से एक इन्सान** (के पुतले) **को बनाने वाला हूं**(71) **तो मैं जब उस** (के जिस्म) **को पूरा बना चुकूं और उसमें अपनी** (तरफ़ से) **जान डाल दूं तो तुम सब उसके आगे सजदे में गिर जाना**(72) **तो** (जब अल्लाह तआ़ला ने उस को बना लिया तो) **सारे के सारे फ़रिशतों ने** (उस को यानी आदम अलैहिस्सलाम को) **सजदा किया**(73) **सिवाए इबलीस के, कि वो घमन्ड में आ गया और काफ़िरों में से हो गया**(74) **अल्लाह तआ़ला ने कहा कि ऐ इबलीस जिस चीज़ को मैं ने अपने हाथों से बनाया** (यानी जिस चीज़ को वजूद में लाने के लिए अल्लाह की ख़ास महरबानी हुई फिर उसके सामने सजदा करने का हुक्म दिया गया तो) **उसको सजदा करने से तुझे किस चीज़ ने रोका, क्या तू घमन्ड में आ गया** (और असल में बड़ा नहीं है) **या यह कि तू** (असल में ऐसे) **बड़े दर्जे वालों में है** (जिसको सजदे का हुक्म करना ही सही नहीं)(75) **कहने लगा कि** (दूसरी बात सही है यानी) **मैं आदम से बेहतर हूं,** (क्योंकि) **आप ने मुझ को आग से पैदा किया है और इस**

(आदम) **को मिट्टी से पैदा किया** (है बस मुझ को इसके सामने सजदा करने का हुक्म देना सही नहीं) **है**(76) (अल्लाह तआ़ला ने) **कहा तो** (अच्छा फिर) **आसमान से निकल क्योंकि बेशक तू** (इस हरकत से) **मरदूद हो गया**(77) **और बेशक तुझ पर मेरी लानत रहेगी क़ियामत के दिन तक** (और उसके बाद रहमत का सवाल ही नहीं)(78) **कहने लगा** (कि अगर मुझ को आदम की वजह से मरदूद किया है) **तो फिर मुझ को** (जीने की) **मोहलत दीजिए क़ियामत के दिन तक** (ताकि इन से और इनकी औलाद से ख़ूब बदला लूं)(79) **कहा** (अल्लाह तआ़ला ने जब तू मोहलत मांगता है) **तो** (जा) **तुझ को मोहलत दी गई**(80) **एक तय दिन तक**(81) **कहने लगा** (जब मुझ को मोहलत मिल गई) **तो** (मुझ को भी) **आपकी** (ही) **इ़ज़्ज़त की क़सम** (है) **मैं उन सब को बहकाऊंगा**(82) **जिसवाए आप के उन बन्दों के जो उन में चुन लिये गये हैं** (यानी आप ने उन को मेरे असर से बचाए रक्खा)(83) **कहा** (अल्लाह तआ़ला ने) **कि मैं सच कहता हूं और मैं तो** (सदा) **सच ही कहा करता हूं**(84) **कि मैं तुझ से और जो उन में तेरा साथ दे उन सब से जहन्नम को भर दूंगा**(85) (ऐ पैग़म्बर) **आप** (लोगों से) **कह दीजिए कि मैं तुम से इस** (क़ुरआन की तबलीग़) **पर न कुछ बदला चाहता हूं और न मैं बनावट करने वालों में से हूं** (कि ऐसे ही कुछ बनाकर क़ुरआन कह दिया हो और पैग़म्बरी का झूटा दावा किया हो यानी अगर झूट बोलता तो दुनिया का कुछ नफ़ा चाहा होता सो ये दोनों बात नहीं)(86) **यह क़ुरआन तो** (अल्लाह का कलाम और) **दुनिया जहान वालों के लिए बस एक नसीहत** (है जिसकी तबलीग़ के लिए मुझ को पैग़म्बरी मिली है और जिसमें सरासर तुम्हारा ही नफ़ा) **है**(87) **और** (अगर सच्चाई जानने के बावजूद भी तुम नहीं मानते तो) **थोड़े दिनों बाद तुम को इस का हाल मालूम हो जाएगा** (यानी मरने के साथ ही असलीयत खुल जाएगी कि यह हक़ था और इसका इनकार ग़लत था मगर उस वक़्त मालूम होने से कोई फ़ाइदा न होगा)(88)।

नोटः- ऊपर इबलीस के क़िस्से से यह भी मालूम हुआ कि जिस तरह घमन्ड और हसद की वजह से उसने हज़रत आदम को सजदा करने से इनकार कर दिया था उसी तरह अरब के मुशरिक लोग भी हसद और घमन्ड ही की वजह से पैग़म्बर की बात नहीं मान रहे हैं और जो अन्जाम इबलीस का हुआ वो ही उन का भी होना है। (तफ़सीर कबीर)

39-सूरत-ज़ुमर

इस मक्की सूरत में '8' रूकू और '75' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝١ اِنَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ۝٢
اَلَا لِلّٰهِ الدِّيْنُ الْخَالِصُ ۗ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ۘ مَا نَعْبُدُهُمْ اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَآ اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى ۗ اِنَّ اللّٰهَ
يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِيْ مَا هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ كٰذِبٌ كَفَّارٌ ۝٣ لَوْ اَرَادَ اللّٰهُ اَنْ يَّتَّخِذَ
وَلَدًا لَّاصْطَفٰى مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۙ سُبْحٰنَهٗ ۗ هُوَ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝٤ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ يُكَوِّرُ
الَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۗ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ اَلَا هُوَ الْعَزِيْزُ
الْغَفَّارُ ۝٥ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَاَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ الْاَنْعَامِ ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ۗ
يَخْلُقُكُمْ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ خَلْقًا مِّنْۢ بَعْدِ خَلْقٍ فِيْ ظُلُمٰتٍ ثَلٰثٍ ۗ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۗ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ ۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ۝٦

आयत नं० 01 से 06

यह किताब अल्लाह की तरफ़ से उतारी गई है जो ज़बरदस्त (क़ुदरत वाला) **हिकमत वाला है(01)** (ऐ पैग़म्बर) **हम ने हक़ के साथ इस किताब को आप की तरफ़ उतारा है सो आप** (क़ुरआन में बताए तरीक़े से) **ख़ालिस ऐतक़ाद करके अल्लाह की इबादत करते रहिए** (जैसा अब तक करते रहे हैं और जब आप पर भी वाजिब है तो औरों पर तो क्यों वाजिब नहीं होगा)**(02)** **याद रक्खो** (ऐ लोगों) **इबादत** (जो कि शिर्क व दिखावे से) **ख़ालिस** (हो) **अल्लाह ही के लिए है, और जिन लोगों ने** (ख़ालिस इबादत को छोड़ कर) **अल्लाह के सिवा दूसरे रखवाले बना लिए हैं,** (और कहते हैं) **कि हम तो इनकी इबादत सिर्फ़ इसलिए करते हैं कि ये हमें अल्लाह का नज़दीकी बना दें** (यानी हमारी ज़रूरतों या इबादत को अल्लाह के सामने पेश कर दें जैसे दुनिया में बादशाहों के वज़ीर इस काम के होते हैं)**, तो उनके** (और ईमान वालों के) **आपसी झगड़े का**

(क़ियामत के दिन) **अल्लाह तआ़ला** (खुला) **फ़ैसला कर देगा** (कि तौहीद वालों को जन्नत में और शिर्क करने वालों को दोज़ख़ में दाख़िल कर देगा यानी उन लोगों के न मानने पर आप ग़म न करें उन का फ़ैसला वहां होगा, और इसका भी अचम्भा न करें कि सबूतों के बावजूद ये हक़ पर नहीं आते क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला ऐसे आदमी को राह पर नहीं लाता जो** (ज़बान का) **झूटा और** (ऐतक़ाद से) **काफ़िर हो** (यानी मुंह से कुफ़्र की बातें बोलता हो और दिल से कुफ़्र के अक़ीदे पर जमा हो तो उसकी हटधर्मी की वजह से अल्लाह तआ़ला भी उसको हिदायत की तौफ़ीक़ नहीं देता)**(03) अगर** (मान लो) **अल्लाह तआ़ला किसी को औलाद बनाने का इरादा करता** (जैसा कि मुशरिक लोग फ़रिशतों को अल्लाह की बेटियां कहते थे) **तो** (चूंकि अल्लाह के सिवा सब मख़्लूक़ हैं इसलिए) **ज़रूर अपनी मख़्लूक़** (ही) **में से जिस को चाहता** (इस काम के लिए) **चुन लेता** (और वो दूसरी जिन्स से होता जो ऐब की बात है और) **वो** (ऐबों से) **पाक** (है तो उसके औलाद बताना ग़लत) **है,** (तो साबित हो गया कि) **वो अल्लाह एक है** (कि उस का कोई साझी नहीं और) **ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाला है कि उस जैसा कोई नहीं) **है(04) उसने ज़मीन और आसमान को हिकमत से पैदा किया वो रात** (के अन्धेरे) **को दिन** (की रौशनी) **पर लपेट देता है** (जिससे दिन छुप जाता है और रात आजाती है) **और दिन** (की रौशनी) **को** (रात के अन्धेरे) **पर लपेट देता है** (जिससे रात ग़ाइब और दिन आ जाता है) **और उसने सूरज और चान्द को काम में लगा रक्खा है, कि** (उनमें) **हर एक तय वक़्त तक चलता रहेगा, याद रक्खो कि** (इन दलीलों के बाद भी अल्लाह को एक मानने से इनकार पर अज़ाब का ख़तरा है क्योंकि) **वो ज़बरदस्त** (ताक़त वाला है लेकिन अगर कोई तौबा कर ले तो) **बड़ा बख़्शने वाला** (भी) **है(05) उसने तुम लोगों को एक जान** (यानी आदम अलैहिस्सलाम) **से पैदा किया** (कि पहले वो अकेला जिस्म पैदा हुआ) **फिर उसी से उसका जोड़ा बनाया** (यानी हव्वा को पैदा किया फिर उन से सारे इन्सान फैला दिये) **और तुम्हारे** (नफ़े के लिए) **चौपाए जानवरों में आठ जोड़ें पैदा किये** (ख़ास कर उन आठ का ज़िक्र इसलिए कि ये ही ज़्यादा काम में आते हैं)**, वो तुम को मांओं के पेट में एक हालत के बाद दूसरी हालत पर** (और दूसरी के बाद तीसरी हालत पर इसी तरह हालतों पर गुज़ारते हुए) **बनाता है** (और यह बनाना) **तीन अन्धेरों में** (होता है, एक अन्धेरा पेट का दूसरा बच्चे दानी का तीसरा उस झिल्ली का जिसमें बच्चा होता है और इस तरह बनाना उसके इल्म और क़ुदरत के कमाल की दलील है)**, यह है अल्लाह तुम्हारा रब** (जिसकी ख़ूबियां अभी तुमने सुनीं) **उसी की हुकूमत है, उसके सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं तो** (इन दलीलों के बाद) **तुम कहां** (दीन से) **फिरे चले जा रहे हो** (बल्कि ज़रूरी है कि एक अल्लाह को

मानो और शिर्क छोड़ दो)(06)।

नोटः- एक हदीस में है कि अल्लाह तआला किसी ऐसी चीज़ को कुबूल नहीं करते जिसमें किसी ग़ैर को शरीक किया गया हो। (क़ुरतबी)

إِنْ تَكْفُرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ ۖ وَلَا يَرْضَىٰ لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۖ وَإِنْ تَشْكُرُوا يَرْضَهُ لَكُمْ ۗ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ
أُخْرَىٰ ۗ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ مَرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ وَإِذَا مَسَّ
الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهُ مُنِيبًا إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا خَوَّلَهُ نِعْمَةً مِنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُو إِلَيْهِ مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلَّهِ
أَنْدَادًا لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيلِهِ ۚ قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ قَلِيلًا ۖ إِنَّكَ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ ۝ أَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ آنَاءَ اللَّيْلِ
سَاجِدًا وَقَائِمًا يَحْذَرُ الْآخِرَةَ وَيَرْجُو رَحْمَةَ رَبِّهِ ۗ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۗ
إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ ۝ قُلْ يَا عِبَادِ الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا رَبَّكُمْ ۚ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ۗ
وَأَرْضُ اللَّهِ وَاسِعَةٌ ۗ إِنَّمَا يُوَفَّى الصَّابِرُونَ أَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

आयत नं० 07 से 10

(ऐ लोगो तुम ने कुफ़्र व शिर्क की बुराई सुन ली उसके बाद) **अगर तुम कुफ़्र** (व शिर्क) **करोगे तो अल्लाह तआला** (का कोई नुक़सान नहीं क्योंकि वो) **तुम्हारा** (और तुम्हारी इबादत का) **ज़रूरत मन्द नहीं** (कि तुम्हारे इबादत न करने और तौहीद न अपनाने से कुछ उसको नुक़सान पहुंचे)**, और** (यह बात ज़रूर है कि) **वो अपने बन्दों के लिए कुफ़्र को पसन्द नहीं करता** (क्योंकि कुफ़्र से बन्दों को नुक़सान पहुंचता है)**, और अगर तुम शुक्र करोगे** (जिसकी पहली सीढ़ी ईमान है) **तो** (उस का कोई नफ़ा नहीं मगर चूंकि तुम्हारा नफ़ा है इसलिए वो) **इसको तुम्हारे लिए पसन्द करता है, और** (हमारे यहां क़ानून है कि) **कोई किसी** (के गुनाह) **का बोझ नहीं उठाता** (इसलिए कुफ़्र करके यह भी न समझना कि हमारा कुफ़्र दूसरे के आमाल नामे में किसी वजह से लिखा जाएगा चाहे वो इस बात की ज़िम्मेदारी लेले)**, फिर अपने रब के पास तुम को लौट कर जाना होगा तो वो तुम्हारे सब किये काम तुम को बता** (देगा और सज़ा) **देगा,** (बस यह गुमान भी ग़लत है कि उनके कामों की पेशी का वक़्त न आएगा, और यह भी न गुमान मत करना कि हमारे कुफ़्र की शायद उसको ख़बर न हो बल्कि)

वो दिलों तक की बातों को जानने वाला है(07) और (मुशरिक) **आदमी** (की हालत यह है कि उस) **को जब कोई तकलीफ़ पहुंचती है तो अपने** (सच्चे) **रब को उसी की तरफ़ लौ लगा कर पुकारने लगता है** (और सब माबूदों को भूल जाता है) **फिर जब अल्लाह तआ़ला उसको अपने पास से** (अमन आसानी की) **नेमत देदेता है तो जिस** (तकलीफ़ को दूर करने) **के लिए पहले से** (अल्लाह को) **पुकार रहा था उस को भूल जाता** (है और बेपरवा हो जाता) **है और अल्लाह के साझी बनाने लगता है जिस का असर** (अपने गुमराह होने के अलावा) **यह होता है कि अल्लाह तआ़ला के रास्ते से दूसरों को** (भी) **भटकाता है** (और अगर उस मुसीबत को याद रखता तो तौहीद पर जमा रहता)**, आप** (ऐसे आदमी से) **कह दीजिए कि अपने कुफ़्र की बहार थोड़े दिनों और लूट ले** (फिर अन्जाम कार) **तू दोज़ख़ियों में से होने वाला है(08)** (आगे अकेले अल्लाह को मानने वालों की तारीफ़ व ख़ुशख़बरी है यानी) **भला जो आदमी रात की घड़ियों में** (जो आराम का वक़्त होता है) **सजदा व क़ियाम** (यानी नमाज़) **की हालत में इबादत कर रहा हो** (यह तो उसकी खुली हालत है और दिल का हाल यह हो कि) **आख़रत से डर रहा हो और अपने रब की रहमत की उम्मीद** (भी) **कर रहा हो** (क्या ऐसा आदमी और वो शिर्क करने वाला बराबर हो सकते हैं कभी नहीं)**, आप** (दूसरी तरह) **कहिए कि जानने वाले और न जानने वाले** (कहीं) **बराबर होते हैं** (यानी जानने वाले नेक काम करते हैं और अच्छे व बुरे का अन्जाम बराबर नहीं हो सकता, लेकिन) **वो ही लोग नसीहत मानते हैं जो समझ बूझ रखने वाले हैं(09)** (ऐ पैग़म्बर) **आप** (मोमिनों को मेरी तरफ़ से) **कह दीजिए कि ऐ मेरे ईमान वाले बन्दों तुम अपने रब से डरते** (रहो यानी पाबन्दी से इबादत करते रहो गुनाहों से बचते) **रहो,** (कि) **जो लोग इस दुनिया में नेकी करते हैं उनके लिए नेक बदला है** (आख़रत में तो ज़रूर और दुनिया में भी दिल का चैन तो ज़रूर और कभी सब कुछ)**, और** (अगर वतन में कोई नेकी करने से रूकावट हो तो हिजरत करके दूसरी जगह चले जाओ क्योंकि) **अल्लाह की ज़मीन फैली हुई है,** (और अगर वतन छोड़ने में कुछ तकलीफ़ पहुंचे तो सब्र से काम लो क्योंकि दीन में) **सब्र करने** (और जमे रहने) **वालों को उनका सवाब बेहिसाब ही मिलेगा(10)।**

नोटः- एक हदीस में है कि क़ियामत के दिन सदक़ा देने वाले आएंगे तो उनके सदक़ों (ख़ैरात) को तौल कर उसके हिसाब से पूरा सवाब दिया जाएगा। इसी तरह नमाज़ और हज वग़ैरह इबादत करने वालों को इबादत को तौल कर हिसाब से उनका पूरा-पूरा सवाब दिया जाएगा। फिर जब मुसीबत

पर सब्र करने वाले आएंगे तो उनके लिए कोई तौल नहीं होगा बल्कि बिना हिसाब व अन्दाज़ा के उनकी तरफ़ सवाब बहा दिया जाएगा क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया...... "इन्नमा युवफ़्फ़स्साबिरूना अजरुहुम बिग़ैरि हिसाब"। यहां तक कि वो लोग जिनकी दुनिया की ज़िन्दगी आराम में गुज़री तमन्ना करने लगेंगे कि काश दुनिया में उनके बदन कैंचियों से काटे गये होते तो हमें भी सब्र का ऐसा ही बदला मिलता।

और हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० कहते हैं कि जो आदमी यह चाहता है कि महशर में हिसाब के वक़्त अल्लाह तआ़ला उस पर आसानी कर दें उसको चाहिए कि अल्लाह तआ़ला उसको रात की अन्धेरी में नमाज़ की हालत में पाए इस तरह कि उसको आख़रत की फ़िक्र भी हो और रहमत की उम्मीद भी।

कुछ हज़रात ने मग़रिब व इशा के बीच के वक़्त को भी रात की (इस बरकत वाली) घड़ी में लिखा है। (क़ुरतबी)

قُلْ اِنِّیْٓ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّیْنَ ﴿۱۱﴾ وَ اُمِرْتُ لِاَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ الْمُسْلِمِیْنَ ﴿۱۲﴾ قُلْ اِنِّیْٓ اَخَافُ
اِنْ عَصَیْتُ رَبِّیْ عَذَابَ یَوْمٍ عَظِیْمٍ ﴿۱۳﴾ قُلِ اللّٰهَ اَعْبُدُ مُخْلِصًا لَّهٗ دِیْنِیْ ﴿۱۴﴾ فَاعْبُدُوْا مَا شِئْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ ؕ
قُلْ اِنَّ الْخٰسِرِیْنَ الَّذِیْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَ اَهْلِیْهِمْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ ؕ اَلَا ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِیْنُ ﴿۱۵﴾ لَهُمْ مِّنْ
فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَ مِنْ تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ؕ ذٰلِكَ یُخَوِّفُ اللّٰهُ بِهٖ عِبَادَهٗ ؕ یٰعِبَادِ فَاتَّقُوْنِ ﴿۱۶﴾ وَ الَّذِیْنَ اجْتَنَبُوا
الطَّاغُوْتَ اَنْ یَّعْبُدُوْهَا وَ اَنَابُوْٓا اِلَى اللّٰهِ لَهُمُ الْبُشْرٰى ۚ فَبَشِّرْ عِبَادِ ﴿۱۷﴾ الَّذِیْنَ یَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ فَیَتَّبِعُوْنَ
اَحْسَنَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِیْنَ هَدٰىهُمُ اللّٰهُ وَ اُولٰٓئِكَ هُمْ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۱۸﴾ اَفَمَنْ حَقَّ عَلَیْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ ؕ
اَفَاَنْتَ تُنْقِذُ مَنْ فِی النَّارِ ﴿۱۹﴾ لٰكِنِ الَّذِیْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ مِّنْ فَوْقِهَا غُرَفٌ مَّبْنِیَّةٌ ۙ تَجْرِیْ مِنْ
تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ وَعْدَ اللّٰهِ ؕ لَا یُخْلِفُ اللّٰهُ الْمِیْعَادَ ﴿۲۰﴾

आयत नं० 11 से 20

(ऐ पैग़म्बर) **आप कह दीजिए कि मुझ को** (अल्लाह की तरफ़ से) **हुक्म हुआ है कि मैं**

अल्लाह की इस तरह इबादत करूं कि इबादत को उसी के लिए ख़ालिस रक्खूं (कि उसमें शिर्क की मिलावट न हो)(11) **और मुझ को** (यह भी) **हुक्म हुआ है कि** (इस उम्मत के लोगों में) **सब मुसलमानों में पहले** (इस्लाम को हक़ मानने वाला) **मैं बनूं** (और साफ़ बात है कि हुक्मों को मानने में नबी का पहला होना ज़रूरी है)(12) **आप** (यह भी) **कह दीजिए कि अगर** (मान लो) **मैं अपने रब का कहना न मानूं तो मैं एक बड़े दिन** (यानी क़ियामत) **के अज़ाब का डर रखता हूं**(13) **और आप** (यह भी) **कह दीजिए कि** (मुझे जिस बात का हुक्म हुआ है मैं तो उसी पर कारबन्द हूं जैसा कि) **मैं तो अल्लाह ही की इबादत इस तरह करता हूं कि इबादत को उसी के लिए ख़ालिस रखता हूं** (जिसमें शिर्क की ज़रा सी भी मिलावट नहीं)(14) **तो** (चाहिए तो यह था कि तुम भी ऐसे ही ख़ालिस इबादत करो लेकिन अगर तुम नहीं मानते तो तुम जानो और) **अल्लाह को छोड़ कर तुम्हारा दिल जिस चीज़** (की इबादत) **को चाहे उस की इबादत करो** (क़ियामत के दिन उसका मज़ा चक्खोगे, और) **आप उन से** (यह भी) **कह दीजिए कि पूरा नुक़सान उठाने वाले वो ही लोग हैं जो अपनी जानों से और घर वालों से क़ियामत के दिन नुक़सान में रहे** (यानी न अपनी जान से उस को कोई फ़ाइदा पहुंचा और न अपने घर वालों से क्योंकि वो लोग भी अगर उन्हीं की तरह गुमराह थे तो वो भी अज़ाब में गरिफ़्तार होंगे दूसरों को क्या फ़ाइदा पहुंचाएंगे और अगर वो सच्चे मोमिन होकर जन्नत में होंगे तो भी वो काफ़िरों की कोई सिफ़ारिश करके नफ़ा नहीं पहुंचा सकते)**, याद रक्खो कि खुला हुआ नुक़सान ये ही है**(15) **उनके लिए उनके ऊपर से भी आग के अंगारे होंगे और उनके नीचे से भी आग के अंगारे होंगे, ये वोही** (अज़ाब) **है जिससे अल्लाह अपने बन्दों को डराता** (है और उससे बचने के तरीक़े बताता है जो सच्चे दीन पर चलना) **है,** (सो) **ऐ मेरे बन्दों मुझ से** (यानी मेरे अज़ाब से) **डरो**(16) **और जो लोग शैतान की इबादत से बचते हैं** (यानी उसके कहने में नहीं चलते) **और अल्लाह की तरफ़ लौ लगाते हैं उनके लिए ख़ुशख़बरी है तो आप मेरे बन्दों को ख़ुशख़बरी सुना दीजिए**(17) **जो** (ऐसे हैं कि अल्लाह के) **कलाम को ध्यान से सुनते हैं फिर उसकी अच्छी बातों पर चलते** (हैं और अल्लाह के हुक्म सभी अच्छे) **हैं, ये ही हैं जिन को अल्लाह ने सीधी राह दिखा दी और ये ही हैं जो अक़्ल वाले हैं**(18) (आगे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तसल्ली देने के लिए कहा गया है कि इन काफ़िरों को मोमिन बना देना आप के बस से बाहर है इसलिए इस पर कोई ग़म न करें कि) **भला जिस आदमी पर अज़ाब की** (नसीबी) **बात तय हो चुकी, तो क्या आप ऐसे आदमी को जो कि** (अल्लाह के इल्म में) **दोज़ख़ में है** (जहन्म की सज़ा से) **छुड़ा सकते हैं** (यानी जो दोज़ख़ में जाने वाले हैं वो कोशिश

से भी गुमराही से बाज़ न आएंगे इसलिए उन पर अफ़सोस और ग़म बेकार है)(19) **लेकिन जो लोग** (आप से हुक्मों को सुन कर) **अपने रब से डरते रहे उनके लिए** (जन्नत के महलों के) **झरोके हैं जिनके ऊपर और झरोके हैं जो बने बनाए तैयार हैं** (और) **उनके नीचे नहरें बहती हैं, यह अल्लाह ने वादा किया है,** (और) **अल्लाह वादा ख़िलाफ़ी नहीं करता(20)।**

नोटः- अक़्ल का काम तो ये है कि अच्छे और बुरे और हक़ व नाहक़ को पहचाने और अच्छे को अपनाए ।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَلَكَهُ يَنَابِيعَ فِي الْأَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ ثُمَّ يَهِيجُ
فَتَرَاهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَجْعَلُهُ حُطَامًا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرَىٰ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ۝٢١ أَفَمَن شَرَحَ اللَّهُ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ
فَهُوَ عَلَىٰ نُورٍ مِّن رَّبِّهِ ۚ فَوَيْلٌ لِّلْقَاسِيَةِ قُلُوبُهُم مِّن ذِكْرِ اللَّهِ ۚ أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝٢٢ اللَّهُ نَزَّلَ أَحْسَنَ
الْحَدِيثِ كِتَابًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُودُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ثُمَّ تَلِينُ جُلُودُهُمْ وَقُلُوبُهُمْ إِلَىٰ
ذِكْرِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ هُدَى اللَّهِ يَهْدِي بِهِ مَن يَشَاءُ ۚ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۝٢٣

आयत नं० 21 से 23

(ऐ लोगो) **क्या तुम ने इस** (बात) **पर नज़र नहीं की अल्लाह तआ़ला ने आसमान से पानी बरसाया फिर उसको ज़मीन के सोतों में पहुंचा**(कर जमा कर)**देता है फिर** (जब नलों कुओं से निकाल लेते हैं तो) **उस** (पानी) **से खेतियां पैदा करता है जिसकी बहुत सी क़िस्में हैं फिर वो खेती बिल्कुल सूख जाती है तो तुम उस को देखते हो कि पीली पड़ गई है फिर** (अल्लाह तआ़ला) **उस को चूरा-चूरा कर देता है, इस** (नमूने) **में समझदार लोगों के लिए बड़ा सबक़** (है कि ये ही हालत हू बहू इन्सान की दुनिया की ज़िन्दगी की है जिसमें लग कर आख़रत को भूल रहा) **है(21) सो जिस आदमी का सीना अल्लाह तआ़ला ने इस्लाम के** (क़ुबूल करने के) **लिए खोल दिया** (यानी इस्लाम की सच्चाई का उस को यक़ीन आगया) **और वो अपने रब के** (दिये हुए) **नूर** (यानी सीधे रास्ते) **पर** (चल रहा है यानी यक़ीन लाकर उस के मुवाफ़िक़ अमल करने लगा क्या वो आदमी गुमराहों के बराबर) **है, सो जिन लोगों के दिल अल्लाह के ज़िक्र से असर नहीं लेते** (यानी ईमान नहीं लाते) **उन के लिए** (क़ियामत में) **बड़ी तबाही है,** (और दुनिया में) **ये लोग खुली**

गुमराही में (गरिफ़्तार) **हैं**(22) (आगे उस नूर और ज़िक्र का बयान है कि) **अल्लाह तआ़ला ने बड़ा अच्छा कलाम** (यानी कुरआन) **उतारा है जो ऐसी किताब है कि** (जिस की बातें) **आपस में मिलती जुलती हैं** (और जिसमें समझाने के लिए कोई-कोई बहुत ज़रूरी बात) **बार-बार दोहराई गई जिससे अपने रब से डरने वालों के बदन कांप उठते हैं फिर उनके बदन और दिल नर्म होकर अल्लाह के ज़िक्र** (यानी अल्लाह की किताब पर अमल करने) **की तरफ़ झुक जाते हैं,** (और) **यह** (कुरआन) **अल्लाह की हिदायत है जिसके वास्ते से वो जिसे चाहता है रास्ता दिखा देता है** (जैसे डरने वालों का हाल अभी सुनाया गया) **और अल्लाह जिसको गुमराह करता है उसे कोई रास्ते पर लाने वाला नहीं** (जैसा सख़्त दिल काफ़िरों का हाल अभी सुनाया गया)(23)।

नोटः- एक हदीस में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि "जिस बन्दे के बदन पर अल्लाह के डर से बाल खड़े हो जाएं (यानी बदन कांपने लगे) तो अल्लाह तआ़ला उसके बदन को (दोज़ख़ की) आग पर हराम कर देते हैं"।

हज़रत असमा बिन अबीबक्र फ़रमाती हैं कि सहाबा-ए-किराम का आम हाल ये ही था कि जब उनके सामने कुरआन पढ़ा जाता तो उनकी आंखों में आंसू आ जाते और बदन पर बाल खड़े हो जाते। (क़रतबी)

اَفَمَنْ يَّتَّقِىْ بِوَجْهِهٖ سُوْٓءَ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَ قِيْلَ لِلظّٰلِمِيْنَ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿۲۴﴾ كَذَّبَ الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۲۵﴾ فَاَذَاقَهُمُ اللّٰهُ الْخِزْىَ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَ لَعَذَابُ
الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿۲۶﴾ وَ لَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِىْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ لَّعَلَّهُمْ
يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۲۷﴾ۚ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِىْ عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿۲۸﴾ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلًا فِيْهِ شُرَكَآءُ
مُتَشٰكِسُوْنَ وَ رَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ ؕ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ۚ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۲۹﴾ اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّ
اِنَّهُمْ مَّيِّتُوْنَ ﴿۳۰﴾ؗ ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُوْنَ ﴿۳۱﴾ؑ

आयत नं० 24 से 31

भला (उस का कैसा बुरा हाल होगा) **जो आदमी क़ियामत के दिन सख़्त अज़ाब को अपने**

चेहरे पर रोकेगा (क्योंकि हाथ पैर तो बन्धे होंगे इसलिए अज़ाब की मार सीधे चेहरे पर होगी), **और ऐसे ज़ालिमों को कहा जाएगा कि जो कुछ तुम किया करते थे** (अब) **उसका मज़ा चक्खो** (तो क्या यह अज़ाब में पकड़ा हुआ और जो ऐसा न हो बराबर हो सकते हैं)(24) **जो लोग इनसे पहले हो चुके हैं उन्होंने भी** (सच्चाई को) **झुटलाया था सो उन पर अज़ाब इस तरह से आया कि उन्होंने सोचा भी नहीं था(25) इसलिए अल्लाह तआ़ला ने उन को इस ज़िन्दगी में भी रूसवाई का मज़ा चखाया** (कि ज़मीन में धंस जाने और चेहरा बिगड़ जाने और आसमान से पत्थर बरसने जैसे अज़ाब से दुनिया में बदनाम हुए) **और आख़रत का अज़ाब और भी बड़ा है, काश ये लोग समझ जाते(26) और हम ने लोगों** (को समझाने) **के लिए इस कुरआन में हर क़िस्म की** (ज़रूरी) **अच्छी बातें बयान की हैं ताकि ये लोग नसीहत पकड़ें(27)** (जिस की हालत यह है कि) **वो कुरआन अरबी** (ज़बान में) **है जिसमें ज़रा भी कमी नहीं** (और ये बातें इसलिए लाई गईं) **ताकि ये लोग** (इन सच्ची और साफ़ बातों को सुन कर) **डरें** (और नेक राह चलें और दूसरों को भी समझाएं बस कुरआन के हिदायत होने में तो कोई कमी नहीं कमी न समझने वालों में है)(28) **अल्लाह तआ़ला ने** (अल्लाह को एक मानने वाले और शिर्क करने वाले के बारे में) **एक मिसाल बयान की है कि एक आदमी** (गुलाम) **है जिसमें कई साझी हैं जिनमें आपस में खींचतान** (भी) **है और एक और आदमी है कि पूरा एक ही आदमी का** (गुलाम) **है, क्या दोनों की हालत बराबर** (हो सकती) **है** (और साफ़ बात है कि ये दोनों बराबर नहीं पहला आदमी तकलीफ़ में है कि सदा परीशान रहता है कि किसका कहना मानूं दूसरा आदमी आराम में है कि एक ही से जुड़ा है बस पहली मिसाल शिर्क करने वाले की है कि सदा डांवा डोल रहता है अल्लाह की तरफ़ तो कभी दूसरे माबूदों की तरफ़ फिर दूसरों में भी एक पर तसल्ली नहीं कभी किसी की तरफ़ कभी किसी की तरफ़), **अलहम्दु लिल्लाह** (बस इस मिसाल से हक़ साबित हो गया लेकिन फिर भी ये लोग नहीं मानते) **बल्कि** (मानते तो क्या) **इनमें अक्सर लोग समझते भी नहीं** (क्योंकि समझने का इरादा ही नहीं करते)(29) **आप** (ऐ पैग़म्बर इनके ईमान न लाने पर ग़म न कीजिए क्योंकि दुनिया से आप) **को भी मर जाना है और इन को भी मर जाना है(30) फिर क़ियामत के दिन तुम** (दोनों फ़रीक़ अपने-अपने) **मुक़दमे अपने रब के सामने पेश करोगे** (उस वक़्त खुला फ़ैसला हो जाएगा और फ़ैसला यह होगा कि झूटों को जहन्नम का अज़ाब होगा और सच्चों को बड़ा इनआम मिलेगा)(31)।

नोटः- एक हदीस में है कि जिस आदमी के ज़िम्मे किसी का हक़ है उस को चाहिए कि दुनिया ही में उसको अदा करके या मुआफ़ कराकर बरी हो जाए क्योंकि आख़िरत में रूपये पैसे तो होंगे नहीं अगर ज़ालिम के पास कुछ नेकियां हैं तो ज़ुल्म की बराबर उससे लेकर मज़लूम को देदी जाएंगी और अगर उसके पास नेकियां नहीं हैं तो मज़लूम के गुनाह लेकर उस ज़ालिम पर डाल दिये जाएंगे। (बुख़ारी शरीफ़)

तफ़सीर मज़हरी में है कि ज़ुल्म के बदले में सब नेकियां तो ली जा सकती हैं मगर ईमान नहीं लिया जाएगा और यह आदमी सज़ा भुगतने के बाद फिर जन्नत में जाएगा और फिर सदा उसी में रहेगा।